अन्दर के पृष्ठों पर.....

अपनी बात 2
प्राचार्य की कलम से 3
समसामायिकी 2010 4
स्कूल इन्फो 7
प्रतिभायें 8
विज्ञान 10
चले नवांकुर 11
कैरियर 13
ग्रन्थ समीक्षा 17
पुस्तक समीक्षा 18
स्वास्थ्य 20
रासेयो 22
स्काउट 23
पुस्तकालय 24
खेल 25
शिक्षक की कलम 27
डॉल्फिन 30
बच्चों की कलम 31
नन्ही कूची 39

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

सम्पादकीय

प्रिय पाठको,

*आप सभी के समक्ष **क्रमशः** का एक और अंक प्रस्तुत है। विद्यार्थियों की उपलब्धियों से भरा, समसामयिक घटनाक्रम को उजागर करता, कैरियर के माध्यम से दिशा–निर्देशन करता, स्वास्थ्य सम्बन्धी सलाह देता, बड़ों की सीख देता, छोटों के भावों को बताता, अद्भुत ज्ञान कराता क्रमशः का यह पाँचवा विषेशांक है **क्रमशः** के इस अंक में मेधावी छात्र–छात्राओं के साथ उन सभी छात्र–छात्राओं का उल्लेख है, जिन्होंने अनेक पाठ्येत्तर गतिविधियों में अपना परचम लहराया है । **क्रमशः** के इस अंक के माध्यम से विद्यालय परिवार उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ देता है साथ ही जीवन में आगे बढ़ने की कामनाएँ करता है जहाँ एक ओर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का बहुत–बहुत शुभकामनाएँ, वहीं दूसरी ओर अन्य विद्यार्थियों से भी अपील है कि वे भी सार्थक प्रयास करें और आगे बढें, क्योंकि आज का समय प्रतिस्पर्द्धा का समय है और जीवन में वे ही आगे बढ़ पाते है, जो समय की कीमत को पहचानते हैं।*

चूँकि–
करेगा मेहनत तो पेशा रहेगा,
रेशमें मिले–न–मिले रेशा रहेगा।
इसलिए करले अभी काम पूरे,
अभी है मौका न हमेशा रहेगा।

प्राय: अनेक विद्यार्थी यह सोचकर रह जाते हैं कि वे विद्यार्थी, जो प्रतिभाशाली हैं, उन्हें भगवान ने ही प्रतिभा दी है, कुछ मायने तक यह बात सत्य हो, सकती है, परन्तु सदैव नहीं। बिना हथौड़े की चोट मूर्तियाँ नहीं पूजी जातीं, बिना हल के फसल नहीं उपज सकती, बिना तपे लोहा मूर्तियाँ नहीं गढ़ता, फिर कैसे मानव जीवन को बिना परिश्रम उत्कृष्टता दी जा सकती है। इसलिये विद्यार्थियों कड़े संघर्ष के साथ आगे बढेगें, तो देखेंगे कि आप भी अपने आप में आमूल परिवर्तन करके अपनी उपलब्धियों का परचम लहरा सकेंगे कहा भी गया है–

गुजरते वक्त से लम्हें कभी टूटा नहीं करते,
अपने कितने ही दूर हों, छूटा नहीं करते।
लोग कहते हैं टूट गया है सपना
टूटा करती हैं नींद
सपने कभी टूटा नहीं करते।

इसलिए प्रिय बच्चो उठो जागो और निरन्तर प्रयास करो। जब तक मंजिल हमारे कदम नहीं चूमती, क्योंकि जब भी हम किसी चीज को पाने के लिये पूरे प्रयासों से कार्य करते हैं, तो मंजिल खुद व खुद अपने पुजारी का ठिकाना ढूँढ लेती है। जिन्दगी एक जंग है, एक तपस्या है और इस तपस्या का सर्वप्रभाव काल विद्यार्थी जीवन है। इस तपकाल में भोगे गये कष्ट तथा किया गया परिश्रम जीवन भर के लिए बरदान हो सकता है। तो आईये, आज से शपथ लें कि हम सार्थक प्रयास करेंगे और इतनी उपलब्धियाँ हासिल करेंगे कि न केवल क्रमशः में, बल्कि राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय–स्तर की हर पत्र–पत्रिका में हमारा नाम दर्ज होगा। चूँकि कहा भी गया है–

उठाया है जो खतरा, हर कदम पर डूब जाने का,
बही कोशिश समन्दर में खजाना ढूँढ लेती है।
न चिड़ियों की कोई कमाई है न कारोबार कोई,
वो केवल होसला ही है जो आबोदाना ढूँढ लेती है।
जुनून मंजिल का राहों में बचाता है भटकने से,
मेरी दीवानगी खुद अपना ठिकाना ढूँढ लेती है।

– ***संदीप रावत**, प्रधान सम्पादक*

अपनी बात

आजकल एक वाक्य हमेशा सुनाई देता है कि जमाना बदल गया है। प्राय: सभी अपनी कमजोरी छुपाने के लिए वाक्य का सहारा लेते हैं, लेकिन क्यों भूल जाते हैं कि जमाने का निर्माण तो हम से ही हुआ है और जमाना बदलने का अर्थ है, हमारा बदलना। यह बात सही है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में आये दिन जो परिवर्तन हो रहे हैं, क्या पता वे सही भी हैं या सिर्फ पश्चिमी देशों की होड़, तभी तो आज की शिक्षा सिर्फ पैसे की भूख पैदा कर सकती है, मन का सन्तोष नहीं। आज प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए फिर से गाँधी, सुभाष पैदा हों, लेकिन पड़ोसी के घर, क्योंकि मेरा बच्चा तो डॉक्टर बने, इंजीनियर बने और अपने-आप को पैसों के लिए विदेशो में बेच दे। आज व्यक्ति सिर्फ मानसिक विकास चाहता है, नैतिक या चारित्रिक नहीं। भारत में बढ़ते बाल-अपराध इस बात का सबूत है कि भारत की नींव अब खोखली होती जा रही है। मैं इसका जिम्मेदार सिर्फ स्कूली शिक्षा को नहीं मानता, बल्कि माता-पिता भी इस अवनति के बराबर जिम्मेदार हैं। आज माता-पिता बच्चों को मँहगी शिक्षा दिलाना ही अपनी जिम्मेदारी मानते हैं, जबकि वे ये अच्छी तरह जानते हैं कि जितनी जरूरत बच्चों को स्कूली शिक्षा की है, उतनी ही आपके स्नेह एवं संस्कारों की भी है। कई पालक विद्यालय आकर शिक्षकों से अपने बच्चों को सुधारने के लिए कहते हैं। वे कहते हैं, यह बिल्कुल बात नहीं मानता, जवाब देने लगा है, बात-बात पर अकड़ता है। अब आप ही इसे समझायें। मेरा तो इस सन्दर्भ में पालकों से यही कहना है कि ये नतीजा है, आपकी अत्यधिक छूट का। मेरा पालकों को बस यही सुझाव है कि बच्चों को इतना होशियार नहीं बनाना चाहिए कि कल वे आपको ही बेवकूफ बनाने लगें, क्योंकि यदि आज आप बच्चों की गलती पर पर्दा डालेंगे, तो कल वे गलती से आप पर पर्दा डाल देंगे। आगे आप स्वयं समझदार हैं और अकड़ने वाले बच्चों के लिए मैं बस यही कहूँगा कि झुकते वही हैं , जिनमें जान होती है, अकड़ना तो मुर्दों की पहचान होती है। इसीलिए बच्चो, अपने-आपको विनम्र बनाओ, क्योंकि आँधी में जो पेड़ झुक जाते हैं, वे बच जाते हैं और अकड़ने वाले टूट जाते हैं और अपनों से बड़ों के आगे झुकना कोई शर्म की बात नहीं है, बल्कि विनम्रता तो गुणवान् की पहचान है। अन्त में, मैं एक भारतीय बच्चे के हृदय के उद्‌गार आपके सामने रख रहा हूँ कि

''मम्मी-पापा मुझे नहीं चाहिए रुपया-पैसा, न ही मोटर कार चाहिए।
मुझे तो बस आपका साथ, स्नेह तथा संस्कार चाहिए।।
मुझे कर्मों से राम तथा मन से हनुमान बना दो।
आपकी सेवा कर सकूँ, ऐसी सन्तान बना दो।।
क्या करूँगा बनकर विदेशों का गुलाम।
मुझे तो चाहिए श्रवण कुमार जैसा मुकाम।।
मेरे पापा मुझे बना सको तो, गाँधी, सुभाष जैसा महान बना दो।
इस देश के हित में मर-मिटने वाला, आम इंसान बना दो।।''

-योगेश चतुर्वेदी (सहा.सम्पादक),
व्याख्या भौतिक शास्त्र

अतिथि-लेख-*सफलता का सूत्र अनुशासन*

जिन्दगी में सफलता हर विद्यार्थी पाना चाहता है, परन्तु सफलता सब को नहीं मिलती। जिन्हें सफलता नहीं मिलती, उसका एकमात्र कारण उनमें अनुशासन की कमी या अभाव होता है।

अनुशासन शब्द है तो छोटा, परन्तु उसका अर्थ बहुत व्यापक है जिसे विशेष रूप से विद्यार्थी को समझना बहुत आवश्यक है। अनुशासन केवल समझने की नहीं, बल्कि पालन करने की आवश्यकता है। अनुशासन -पालन अगर बचपन या छोटी उम्र से हो, तो बड़े होने पर कोई परेशानी नहीं होती। अनुशासन से आपका ही नहीं, बल्कि समाज और देश का भला होता है।

अनुशासन केवल आज्ञा पालन का नाम नहीं है। अनुशासन से तात्पर्य है- कब और कैसे सोकर उठना, क्या खाना, क्या पहनना, कैसे चलना या बैठना, कैसे पढ़ना, आपके हर कार्य से अनुशासन झलकता या दिखना चाहिये।

प्रात: काल सूर्योदय से पहले उठना चाहिये। प्रात:कालीन कार्य से निवृत्त होने के बाद व्यायाम, प्राणायाम एवं आसन आदि अवश्य करना चाहिये, उसके बाद नाश्ता करना चाहिये।

विद्यालय आने से पूर्व आपका गणवेश साफ सुधरा तथा प्रेस किया हुआ होना चाहिये। आपकी कॉपी किताव, पेन-पेंसिल सब ठीक होना चाहिये। साथ ही, आपका होमवर्क पूरा होना चाहिये।

विद्यालय के लिये घर से समय से निकलना चाहिये, जिससे रास्ते में यातायात नियमों के पालन में परेशानी न हो।

कक्षा में आपका ध्यान पढ़ाई में रहना चाहिये तथा शिक्षकों की आज्ञा का पालन करना चाहिये। कक्षा में बातचीत ज्यादा नहीं करनी चाहिये, शोर तो बिलकुल भी नहीं होना चाहिये।

स्काउट एवं गाइड या एन.सी.सी. के सदस्य बनना चाहिये, जिससे आपमें अनुशासन आयेगा। खेलकूद में भी भाग लेना चाहिये, जिससे आपमें शारीरिक स्फूर्ति, टीम भावना मिलकर काम करने की क्षमता तो बढ़ेगी ही, साथ ही नियमों का पालन करना भी सीख जायेंगे।

विद्यालय से बाहर आते समय लाइन में बाहर आना चाहिये। घर लौटते समय यातायात के नियमों का पालन करना चाहिये। घर आकर अपनी पुस्तकें कॉपी, पेन, पेंसिल यथा स्थान रखें। अपना गणवेश, जूते और मौजे भी उचित स्थान पर रखना चाहिये, जिससे दूसरे दिन सुबह आपको परेशानी नहीं होगी। अभी का एक मिनिट कल आपके पाँच मिनिट बचाये। पढ़ने का समय निश्चित करना चाहिये, टी.वी. कम देखें, कार्टून तो बिल्कुल भी नहीं देखना चाहिये।

निश्चित समय पर सोना तथा निश्चित समय पर उठना चाहिये, जिससे आपको कक्षा में नींद नहीं आयेगी। बीड़ी,सिगरेट, पान, पान-पराग, गुटका तथा तम्बाकू का सेवन बिल्कुल भी नहीं करना चाहिये। अनुशासन के बल पर ही पुलिस और सेना अपनी जवाबदारी पूरी करने में सफल होते हैं। अनुशासन में रहने वाला व्यक्ति अपने परिसर, समय और देश में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। अगर अनुशासन न हो, तो कोई परिवार समाज या राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता है। **''अनुशासन ही सफलता की एकमात्र कुंजी है।''**

-लेफ्टिनेण्ट सतीश कुमार शर्मा

प्राचार्य की कलम से.....

प्रिय पाठको,

क्रमशःका यह 47 वाँ अंक एवं 7 वाँ वार्षिक विशेषांक आज आपके हाथों में है। आज से 32 वर्ष पूर्व **क्रमशः** का पहला अंक प्रकाशित हुआ था, जिसमें वर्तमान विद्यालय का खाका प्रकाशित हुआ था। उस समय की अभिनव पहल के प्रथम अंक के मायने आज चहुँ ओर समझे जा सकते हैं। हार्दिक प्रसन्नता सहज ही प्रकट होती है।

क्रमशः मासिक समाचार-पत्र के प्रकाशन का उद्देश्य छात्रों को समसामयिक विषयों का तात्कालिक ज्ञान कराना, उनमें रचनाधर्मिता का विकास करना, मौलिकता का समावेश करना एवं एक अच्छे छात्र के निर्माण में अहम भूमिका निभाना है। आप समय-समय पर **क्रमशः** का आकलन कर अपने अमूल्य सुझाव प्रेषित करते रहें। उद्देश्यों के प्रति सजग सम्पादक-मण्डल सदैव आपके विचारों हेतु प्रतीक्षारत है।

इस समय संचार के क्षेत्र में जबरदस्त क्रान्ति का दौर चल रहा है, जिसका सर्वाधिक प्रभाव नयी पीढ़ी, युवा वर्ग पर पड़ रहा है। यह समय छात्रों के लिए अत्यन्त सावधान एव सतर्क रहने का है। उनकी जरा-सी चूक उनके कैरयर को तहस-नहस कर सकती है।

अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता नितान्त आवश्यक है। प्रतिस्पर्द्धा में अपना महत्त्व प्रतिपादित करने एवं भीड़ में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए आत्मावलोकन की प्रक्रिया सतत चलनी चाहिए। इतिहास साक्षी है, वे ही व्यक्ति अपने को स्थापित कर सके हैं, जिन्होंने समय की नब्ज टटोलकर अपने लक्ष्य गढ़े एवं उन्हें हासिल करने के लिए प्राण-पण से जुट गये। उनकी सोच अन्य से अलग होती है, तो पहचान भी कुछ अलग होना स्वाभाविक ही है। अन्धानुकरण या भीड़ में रहना भेड़ों की कार्यप्रणाली है। सिंह अकेला ही निर्भय होकर वन में विचरण करता है। बनी हुई पगडण्डियों पर चलना उसे रास कहाँ आया? शिकार को लक्ष्य करके दौड़ने पर पैरों के निशान खुद-ब-खुद रास्ता बयाँ करने लगते हैं। चींटी और टिड्डे की कहानी भी आपने पढ़ी या सुनी होगी। एक टिड्डा वर्षा ऋतु में चहुँ ओर हरियाली देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर उछल-कूद करने लगा। मस्ती में कभी इधर उछला, कभी उधर कूदा। जब तक हरियाली रही, धमाचौकड़ी में ही लगा रहा। दूसरी ओर नेत्र-ज्योति से वंचित चींटी दूरदर्शिता के कारण भविष्य हेतु भोजन-संग्रह में लगी रही। कतार में जाना, भोजन लेकर कतार में ही आना और नियत स्थान पर रखकर फिर चल देना। अनवरत् यही क्रम चलता रहा। वर्षा ऋतु बीत जाने के बाद जब ग्रीष्म ऋतु में हरियाली नष्ट हो गयी, भोजन के अभाव में टिड्डा छटपटाता रहा और अन्त में उसने दम तोड़ दिया, जबकि अनुशासनप्रिय, दूरदर्शी एवं परिश्रमी चींटी संगृहीत भोजन का आनन्द ले रही थी। प्राय: देखा जाता है, वे विद्यार्थी ही उच्च पदों को सुशोभित करते हैं, जो चींटी के समान अपने लक्ष्य को समर्पित, अनुशासनप्रिय, परिश्रमी एवं दूरदर्शी होते हैं। टिड्डे के समान अनियमित, स्वच्छन्द, बेफिक्र और लापरवाह जीवन-शैली को अपनाने वाले भीड़ में खो जाते हैं। उनका भविष्य धुँधला होता है। वर्तमान परिवेश एवं वातावरण में भटकाव का खतरा अधिक है। दूरदर्शिता-पूर्ण अपने लक्ष्य को पहचानो, अनुशासन अपनाकर परिश्रम द्वारा उसे प्राप्त करने का प्रयास करो। यही बुद्धिमानी है।

-शैलेन्द्र कुमार दीक्षित, प्राचार्य

लक्ष्य

लक्ष्य निश्चित किये बिना सफलता (मंजिल) प्राप्त नहीं होती है। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को अपना एक लक्ष्य निश्चित करना चाहिए एवं उसी के अनुरूप फिर अध्ययन करना चाहिए। यहाँ लक्ष्य-प्राप्ति के कुछ प्रमुख गुण दिये गये हैं। इन्हें अपनी दैनिक दिनचर्या में धारण करना चाहिए:-

1. **दृढ़ संकल्पः**-निश्चित किये गये लक्ष्य को प्राप्त करने का संकल्प दृढ़ मजबूत होना चाहिए, तभी हम बड़े-से-बड़े लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

2. **एकाग्रहताः**- लक्ष्य-प्राप्ति का दूसरा गुण है, एकाग्रचित्त होकर ही अध्ययन करना चाहिए, चाहे अध्ययन के लिए कम-से-कम समय दें।

3. **नियमितताः**- नियमितता लक्ष्य-प्राप्ति का तीसरा मुख्य गुण है अर्थात् विद्यार्थी को सदैव नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए।

4. **अनुशासनः**- अनुशासन अध्ययन के लिए बहुत ही जरूरी है अर्थात् अनुशासन में रहकर ही अध्ययन करना चाहिए।

5. **समय-सारिणीः**-लक्ष्य-प्राप्ति का आखरी और महत्त्वपूर्ण गुण है समय-सारिणी। सदैव विद्यार्थी को विषयानुसार निश्चित समय में अध्ययन करना चाहिए।

अनुशासन

अनुशासन शब्द 4 शब्दों से मिलकर बना है, जिनका अर्थ है- अनु...अनुसरण करना, शा....शालीनता, स... सभ्यता, न...नम्रता।

- कु.नेहा विश्वकर्मा, कक्षा-10

''केवल वस्त्रों या आभूषणों से जीवन नौका नहीं तिरेगी, बल्कि मृदु स्वभाव से नैय्या पार लगेगी।''

समसामायिकी-2010

जमीन, पानी, हवा में चलेगी कार- ब्रिटिश डिजाइनर फिल पाउली ने एक ऐसी स्पोर्ट्स कार का कंसेप्ट पेश किया है, जिसमें ऐसे अटैचमेंट लगे होंगे, जिनकी मदद से यह पानी में बोट की तरह चल सकती है और एक हेलिकॉप्टर या जेट की तरह उड़ भी सकती है। इसे ''हैलो इण्टरसेप्टन'' नाम दिया गया है।

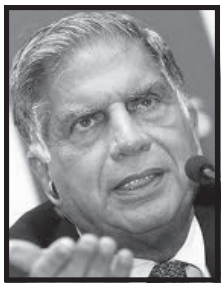

टाटा को बिजनेस पर्सन अवार्ड- बोस्टन टाटा ग्रुप के अध्यक्ष रतन टाटा दुनिया के उन आठ प्रमुख उद्योगपतियों में शामिल हैं, जिन्हें व्यवसाय-जगत की प्रतिष्ठित पत्रिका फार्च्यून ने बिजनेस पर्सन ऑफ द इयर अवार्ड के लिए चुना है। यह अवार्ड दुनिया के उस उद्योगपति को दिया जाएगा, जिसने 2010 के दौरान व्यापार-जगत में सबसे बड़ा प्रभाव छोड़ा।

झपकी आने पर जगा देगी कार- वैज्ञानिकों का दावा है कि उन्होंने एक ऐसी डिवाइस का आविष्कार किया है, जो ऊँघते हुए गाड़ी चलाने वाले ड्राइवरों पर अपनी निगाह रखेगी और उन्हें सावधान करती रहेगी। इसमें एक खास तरह का सेंसर लगा हुआ है। जब भी यह डिवाइस देखेगी कि ड्राइवर की पलकें बन्द हो चुकी हैं यानी वह सोने की स्थिति में है, तो उस समय इसमें लगा अलार्म खुद-ब-खुद बजने लगेगा और ड्राइवर की नींद खुल जायेगी।

सचिन को एशियन पीपुल्स च्वाइस अवार्ड- उपमहाद्वीप के प्रतिष्ठित पुरस्कार एशियन अवाड्र्स की दो श्रेणियों में सचिन को सम्मानित किया गया। एशियन अवाड्र्स-2010 में सचिन को खेल में उत्कृष्ट उपलब्धि और पीपुल्स च्वाइस अवार्ड से नवाजा गया।

चाँद पर पानी सहित चाँदी भी खूब - खगोलविदों का कहना है कि चाँद की सतह पर केवल पानी ही नहीं, बल्कि चाँदी और कार्बन डाई-ऑक्साइड जैसे कई तत्त्वों का मिश्रण भी मौजूद है। पिछले साल चाँद से टकराने वाली लुनर क्रेटर ऑब्जर्वेशन एंड सेंसिंग सैटेलाइट (एल.सी.आर.ओ.एस.एस.) में हुए प्रयोगो से मिले आँकड़ों के आधार पर साइंस-पत्रिका में यह परिणाम प्रकाशित किये गये हैं।

हीरो से सजा है दुनिया का सबसे मँहगा मोबाइल- ब्रिटेन के एक डिजाइनर स्टुअर्ट हैग ने नामी कम्पनी एप्पल के एक आईफोन को बेश कीमती हीरों से सजाकर दुनिया का सबसे मँहगा फोन बना दिया है। इस फोन की कीमत 50 लाख पाउण्ड (करीब 35 करोड़ रुपये) है। ऐसे दो हेण्डसेट बनाये गये हैं। प्रत्येक हेण्डसेट पर सौ कैरेट के पाँच सौ हीरे जड़े गये हैं। फोन के पीछे के हिस्से को सोने की पर्त से ढँक दिया गया है। लिवरपूल के 38 वर्षीय स्टुअर्ट से आस्ट्रेलिया के एक व्यापारी ने ये मँहगे हेण्डसेट तैयार कराये हैं।

टाटा ने दिया हावर्ड बिजनेस स्कूल को 225 करोड़ का चन्दा:- टाटा-उद्योग ने अमेरिका के प्रतिष्ठित हावर्ड बिजनेस स्कूल को 5 करोड़ डालर (225 करोड़ रुपये) का चन्दा दिया है। यह इस प्रबन्ध शिक्षा-संस्थान के लिए विदेश से अब तक की सबसे बड़ी सहयोग-राशि है।

बिजली के तारों में बहेगा इण्टरनेट का संसार - दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के शिक्षक डॉ. विशाल वर्मा व एन.डी.पी.एल. के संजय बाँगर ने दो वर्ष की मेहनत के बाद बिजली के तारों में इण्टरनेट सुविधा का संचार मुमकिन कर दिया है। अब किसी थ्री-पिन सॉकिट से लैपटॉप व कम्प्यूटर सिस्टम पर इण्टरनेट चला सकते हैं।

खेल-महाकुम्भ सम्पन्न - उद्घाटन-समारोह के समान ही कामनवेल्थ गेम्स के समापन-समारोह में भी नयनाभिराम रंगारंग कार्यक्रम पेश कर दिल्ली ने दुनिया को दिखा दिया कि भविष्य अब भारत का है। इसी के साथ कॉमनवेल्थ गेम्स की दिल्ली से विदाई हो गयी, समापन-समारोह में तीन हजार साल से भी अधिक पुराने अपने तेजस्वी और जुनूनी मार्शल आर्ट के जरिये खेल भावना का परिचय दिया।

अब ग्लासगो की बारी-अगले यानी 20 वें राष्ट्रमण्डल खेल वर्ष 2014 में स्काटलैण्ड के शहर ग्लासगो में आयोजित होंगे। 23 जुलाई से 3 अगस्त, 2014 तक इन खेलों क आयोजन किया जायेगा। यह स्कॉटलैण्ड का सबसे बड़ा शहर है और यूनाइटेड किंगडम का तीसरा सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर है।

खुलेंगे मॉडल कॉलेज - मध्यप्रदेश के लटेरी, विदिशा, कटनी, उज्जैन, ग्वालियर, बालाघाट, मन्दसौर, रतलाम, सतना, जबलपुर, सागर आदि स्थानों पर मॉडल स्कूलों की तर्ज पर मॉडल कॉलेज नजर आयेंगे। इस योजना के तहत 250 करोड़ रुपये की लागत से 25 कॉलेजों को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जायेगा। इन मॉडल कॉलेजों में सभी सुविधाओं

के अलावा तीनों संकायों विज्ञान, कला और वाणिज्य की कक्षाएँ एक साथ लगेंगी।

अब कागज से होंगे घर रौशन – ब्रिटेन की प्रयोगशालाओं में आजकल एक खास योजना पर बड़े जोर–शोर से काम चल रहा है। वह है, एक ऐसा वॉल पेपर तैयार करना, जो बिजली के बल्ब का स्थान लेगा। आज से ठीक दो साल बाद यानि 2012 तक रौशनी के लिए दीवारों पर बल्ब या ट्यूबलाइट की जगह कागज के पुर्जे चिपके होंगे।

घट रहा है हमारे चन्दा मामा का आकार – अमेरिकी अन्तरिक्ष एजेंसी नासा के मुताबिक चाँद का आकार पहले की अपेक्षा घट गया है और यह लगातार सिकुड़ता जा रहा है। वैज्ञानिक टॉम वाटर्स ने कहा है कि प्रमाण बताते हैं कि चाँद ठण्डा है, इसलिए उसमें निर्माण के समय से ही संकुचन हो रहा है और यह प्रक्रिया आज भी जारी है।

यूरोप तक जायेगी चीन की ट्रेन – चीन का नया प्रोजेक्ट भारत और अमेरिका के लिए खतरा बनकर सामने आया है। चीन के प्रस्तावित रेल–रूट के अनुसार यह रूट चीन के काशघर से किर्गिस्तान तजाकिस्तान होते हुए ईरान तक जायेगा। चीन को समुद्र के रास्ते सामान भेजने में करीब दो महीने का समय लगता है। इस रेलमार्ग के निर्माण के बाद 11 दिनों में ही यूरोप के बाजारों तक पहँच जायेगा।

सबसे बड़ा सौर–मण्डल मिला – खगोलविदों ने धरती से 127 प्रकाश–वर्ष दूर एक विशाल सौर–मण्डल की खोज की है, जिसमें सात ग्रह हैं, जो सूर्य के समान तारे की परिक्रमा लगा रहे हैं। खगोलविदों का दावा है, इसके पाँच ग्रहों का आकार धरती की तुलना में 13 से 25 गुना के बीच बड़ा है।

पीने का स्वच्छ पानी मानव–अधिकार घोषित – संयुक्त राष्ट्र–महासभा ने प्रस्ताव पास कर पीने के स्वच्छ पानी और साफ–सफाई को मानव–अधिकार घोषित कर दिया है। बोलिविया द्वारा लाये गये इस प्रस्ताव के पक्ष में 122 देशों ने मत दिये जबकि 41 देशों ने मतदान में भाग नहीं लिया। प्रस्ताव में कहा गया है कि पीने का सुरक्षित और साफ पानी व साफ–सफाई मूल मानवाधिकार है, जो सुखी जीवन के लिए अनिवार्य है।

गाँव जाओ, 25 फीसदी ज्यादा वेतन पाओ – गाँवों में डॉक्टरों की कमी को देखते हुए स्वास्थ्य–विभाग ने एक लुभावना पैकेज बनाया है, जिसके तहत गाँवों में नौकरी करने वाले डॉक्टरों को शहर के डॉक्टरों से 25 फीसदी तक ज्यादा वेतन मिलेगा। यही नहीं ,लगातार तीन साल तक गाँव में ड्यूटी करने वाले डॉक्टरों को मनपसन्द स्थान पर पोस्टिंग दी जायेगी।

108 फीट के हनुमान 8500 फीट की ऊँचाई पर– शिमल के जाखू टेम्पल में 8500 फीट की ऊँचाई पर हनुमान जी की 108 फीट ऊँची प्रतिमा लगायी गयी है। 40 कुशल कारीगरों की टीम ने 2 साल की कड़ी मेहनत से इसे आकार दिया है। यह प्रतिमा दुनिया के सात अजूबों में शामिल ब्राजील स्थिल, क्राइस्ट द रीडीमर जो 2296 फीट की ऊँचाई पर बना 99 फीट ऊँचा है,को भी पीछे छोड़ देगी।

एशियाई खेलों का रंगारग समापन – 15 दिनों तक चलने के बाद 16 वें एशियाई खेलों का उद्घाटन समारोह की तरह, चीन की तीसरी बड़ी वर्ल नदी पर है, शिकाद्वीप पर रंगारंग समापन हो गया। समापन समारोह भारतीय गीत ***साजन जी घर आये*** से शुरू हुआ। चीनी कलाकार भारतीय धुनों पर थिरकते नजर आये।

भारत ने इन खेलों में 14 स्वर्ण, 17 रजत और 33 कांस्य–पदकों सहित कुल 64 पदक प्राप्त कर पदक–तालिका में छटवाँ स्थान प्राप्त किया। अगले एशियाई खेल सितम्बर–1014 में दक्षिण कोरिया के इंचयोन में आयोजित होंगे।

सबसे बड़ा फैसला – विवादित स्थल ही भगवान् की जन्मभूमि– इलाहाबाद हाईकोर्ट की, तीन जजों जस्टिस डी.वी. शर्मा,जस्टिस एस.यू.खान, जस्टिस एस. अग्रवाल की लखनऊ पीठ ने पिछले दिनों देश का सबसे बड़ा फैसला सुनाते हुए कहा कि अयोध्या में विवादित स्थल राम–जन्मभूमि है। तीन जजों ने सर्व सम्मत फैसला दिया कि

विवादित स्थल को तीन समान भागों में हिन्दुओं और मुसलमानों में बाँट दिया जाये। जहाँ भगवान् राम विराजमान हैं, हिन्दुओं का हक, जबकि भूमि का बाहरी हिस्सा सुन्नी वक्फ बोर्ड का होगा।

बराक हुसैन की भारत यात्रा - उपलब्धियाँ- भारतीय संसद को सम्बोधित करते हुए श्री ओबामा ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा-परिषद् में भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन किया। ओबामा ने कहा

पाक में आतंकियों की पनाहगाह उन्हें मंजूर नहीं। हम पाक नेताओं पर दबाव डाल रहे हैं कि वे मुम्बई हमलों के दोषियों को उचित सजा दिलायें। भारत ने अमेरीकियों को समझाया कि भारत में आउट सोर्सिंग से घबराने की जरूरत नहीं। 10 अरब डालर के 20 करारों से यू.एस.ए. में 50,000 नयी नौकरियाँ पैदा होंगी। दोनों देश कृषि-सहित अनेक क्षेत्रों में सहयोग बढ़ायेंगे। सीमा-सुरक्षा पर दोनों देशों के गृह-मन्त्रालय मिलकर काम करेंगे। दोनों देश व्यापार की बाधाओं को दूर करेंगे। इसरो सहित अन्य भारतीय संस्थाओं की प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण पर लगी पाबन्दी हटेगी।

ऑरेंज-पुरस्कार-2010 - साहित्य के क्षेत्र में ब्रिटेन के प्रतिष्ठित ऑरेंज-पुरस्कार इस वर्ष अमेरिकी लेखिका बारबरा किंग सोल्वर को उनके उपन्यास लाकुना के लिए दिया गया है। 30 हजार पौण्ड का यह पुरस्कार किसी महिला लेखिका को ही विगत एक वर्ष में प्रकाशित उपन्यास के लिए दिया जाता है।

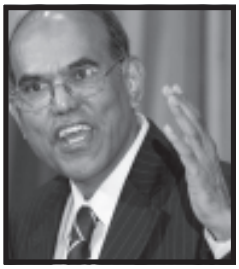

अणुवृत्त-पुरस्कार - अहिंसा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-पुरस्कार के लिए राष्ट्रीय युवा परियोजना एम.एम. सुब्बाराव को शान्ति व अहिंसा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए 14 जून, 2010 को पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. कलाम द्वारा दिया गया।

रतनटाटा डॉ. की उपाधि से सम्मानित - टाटा समूह के चेयरमेन रतन टाटा को डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। लन्दन स्थित केम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें यह उपाधि प्रदान की गयी।

वीरप्पा मोइली ''नेक्स्ट स्टेप फाउण्डेशन आन अवार्ड'' से सम्मानित - भारत के कानून मन्त्री वीरप्पा मोइली को अन्तर्राष्ट्रीय विधिक सहयोग में बढ़ावा देने के लिए 8 जुलाई को लन्दन के हाउस ऑफ कॉमन्स में नेक्स्ट स्टेप फाउन्डेशन आन अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इन्दुशर्मा कथा-सम्मान-2010 - साहित्य के क्षेत्र का 16 वाँ इन्दुशर्मा कथा-सम्मान 8 जुलाई को लन्दन के हाउस आफ कॉमन्स में हिन्दी के साहित्यकार कृषिकेश सुलभ को उनके कथा-संकलन ''बसन्त के हत्यारे'' के लिए दिया गया।

मुरलीधरन का सन्यास - टेस्ट व एक दिवसीय क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने वाले खिलाड़ी मुथैया मुरलीधरन ने टेस्ट क्रिकेट से सन्यास ले लिया।

सचिन तेन्दुलकर बने वायु सेना के ग्रुप-केप्टन - टीम इण्डिया के क्रिकेट स्टार सचिन को 2010 में क्रिकेट के क्षेत्र में महान योगदान के लिए ग्रुप केप्टन की रैंक से सम्मानित किया गया ।

यू.एन.वूमेन का गठन - महिला-अधिकारों की स्थिति में सुधार लाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ) ने एक नये महिला निकाय यू.एन.वूमेन का गठन किया है। इस निकाय को संयुक्त राष्ट्र संघ की 192 सदस्यीय महासभा ने 1 जुलाई, 2010 को सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी।

फीफा वर्ल्ड कप स्पेन ने जीता - 19वाँ फुटबॉल विश्वकप, जो कि फीफा (फेडरेशन ऑफ इण्डरेशनल फुटबॉल एसोसियशन) द्वारा आयोजित दक्षिण अफ्रीका में खेला गया, इसके विजेता स्पेन ने 3 करोड़ डॉलर, उपविजेता हॉलैण्ड 214 करोड़, जबकि तृतीय स्थान प्राप्त जर्मनी ने 2 करोड़ डॉलर का पुरस्कार जीता। आगामी 20वाँ विश्वकप 2014 में ब्राजील में होगा।

संकलन कर्त्ता -

सुनील कुमार भावसार *(उ. श्रे. शिक्षक)*

स्कूल इन्फो - 2010

नवांकुर में हुई स्वच्छता पर प्रतियोगिताएँ

नगरपालिका परिषद्, गंजबासौदा एवं विकासखण्ड शिक्षा-अधिकारी महोदय के निर्देशानुसार नवांकुर में अक्टूबर माह को स्वच्छता माह का रूप देने की श्रृंखला में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी।

चित्रकला-प्रतियोगिता के अन्तर्गत विद्यालय के 25 छात्रों ने पोस्टर के माध्यम से स्वच्छता का सन्देश दिया, जिसमें कक्षा-11 की कु. विशाखा कश्यप एवं कक्षा-9 की छात्रा कु. प्रियंका नरवरिया ने प्रथम व द्वितीय स्थान अर्जित किये।

इसी श्रृंखला में निबन्ध-प्रतियोगिता के अन्तर्गत 40 बच्चों ने निबन्ध-लेखन किया, जिसमें कक्षा-12 के छात्र आशीष शर्मा प्रथम एवं कक्षा 10 के छात्र रोहित कुर्मवंशी द्वितीय रहे।

इन सभी प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में वरिष्ठ आचार्या श्रीमती ताराबाई सोनी, श्री सन्दीप नारायण जेतली, कु.भावना जैन, कु. पारुल जैन रहे। गौरतलब है कि स्वच्छता-कार्यक्रमों की इसी श्रृंखला में 14 अक्टूबर को सामूहिक हाथ-धुलाई-कार्यक्रम रखा गया था। इसी दिन प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट स्थान अर्जित करने वाले छात्र/छात्राओं का राष्ट्रीय सेवा-योजना नवांकुर-इकाई द्वारा पुरस्कृत किया गया।

बासौदा विकासखण्ड में नवांकुर के मोगली अव्वल

विकासखाण्ड-स्तरीय मोगली उत्सव-प्रतियोगिता शा. उत्कृष्ट विद्यालय, गंजबासौदा में आयोजित की गयी, जिसमें नवांकुर विद्यापीठ के छात्र/छात्राओं ने सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देकर सर्वाधिक अंक प्राप्त किये एवं विकासखण्ड में अव्वल रहे। इस प्रतियोगिता

में वरिष्ठ वर्ग से कु. पूजा जैन व रोहित सिंह कुर्मवंशी व कनिष्ठ वर्ग से शुभम पटवा का चयन हुआ। इन सभी प्रतिभागियों ने जिला स्तर पर आयोजित प्रति- योगिता में बासौदा का प्रतिनिधित्व किया।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में नवांकुर से सर्वाधिक छात्र सम्मिलित

रक्त-सेवा-समिति, गंज बासौदा, म.प्र. के तत्त्वावधान में आयोजित रक्तदान से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान-प्रतियोगिता में नवांकुर विद्यापीठ के छात्र नवीन शर्मा कक्षा-10 ने प्रथम, गौरव राजपूत कक्षा-10 ने द्वितीय एवं कु.नेहा बघेल कक्षा-10 ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समिति द्वारा

आयोजित इस प्रतियोगिता में नगर के सभी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया तथा प्रत्येक विद्यालय के तीन श्रेष्ठ छात्रों को प्रशस्ति-पत्र के साथ विवेकानन्द-साहित्य तथा स्मृति-चिह्न प्रदान किया गया।

गौरतलब है कि इस प्रतियोगिता में नवांकुर विद्यापीठ के सर्वाधिक 900 छात्रों ने हिस्सा लिया। विद्यालय- परिवार ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को बधाई दी है।

चित्रकला में विनय को प्रथम स्थान

जिला-स्तरीय कालिदास-प्रतियोगिता के अन्तर्गत चित्रकला-प्रतियोगिता में नवांकुर विद्यापीठ के कक्षा-8 के छात्र विनय सोनी ने कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनकी इस चित्रकारी को भोपाल भेजा जायेगा, जहाँ से राज्य-स्तर के लिए चित्रकारी का चयन किया जायेगा।

''पूर्व जन्मों में किये गये शुभकर्मों का संचय ही भाग्य है, जो इस जन्म में मधुर फल प्रदान करता है।''

ॐ

प्रतिभाएँ

कु. समीक्षा जैन
(कक्षा–12)
विज्ञान समूह में
राज्य में
दसवाँ स्थान

कु. दीपाली आर्य
(कक्षा–12)
विज्ञान समूह में
जिले में
प्रथम स्थान

विक्रम रघुवंशी
(कक्षा–12)
विज्ञान समूह में
जिले में
द्वितीय स्थान

कु. नेहा दाँगी
(कक्षा–12)
विज्ञान समूह में जिले में
तृतीय स्थान

शशांक खटवानी
(कक्षा–12)
वाणिज्य समूह में
जिले में
तृतीय स्थान

कु. समीक्षा शाक्य
(कक्षा–10)
जिले में
नवाँ स्थान

अमृतांश कटियार
(कक्षा–10)
जिले में
दसवाँ स्थान

संजय रघुवंशी
(कक्षा–10)
जिले में
दसवाँ स्थान

मेरिट–सूची २०१०

कक्षा.	छात्र/छात्रा का नाम	माता का नाम	पिता का नाम	प्राप्तांक	प्रतिशत	कक्षा में स्थान
कक्षा–10	कु. समीक्षा शाक्य	श्रीमती निर्मला देवी	श्री आनंददेव	554/600	92.33%:	प्रथम
	अमृतांश कटियार	''पुष्पा कटियार	श्री बैजनाथ	552/600	92:%	द्वितीय
	संजय रघुवंशी	''कान्तिबाई रघुवंशी	श्री भीमसिंह	552/600	92%	द्वितीय
	प्रदीप राजपूत	''कृष्णा राजपूत	श्री अमोलसिंह	551/600	91.83%:	तृतीय
	कु. रूचि राय	''सीमा राय	श्री संतोष कुमार	548/600	91.33%:	चतुर्थ
	कु. जूली किरार	''ज्ञानबाई किरार	श्री द्वारका प्रसाद	544/600	90.66:%	पंचम
कक्षा–12 गणित	कु. समीक्षा जैन	श्रीमती रेखा जैन	श्री संजय कुमार	469/500	93.80%:	प्रथम
	कु. दीपाली आर्य	''चन्द्रमुखी आर्य	श्री स्व.गुलाबचन्द	465/500	93%:	द्वितीय
	विक्रम रघुवंशी	''मानाबाई	श्री जसवन्तसिंह	464/500	92.80%:	तृतीय
	कु. नेहा दांगी	''लता दांगी	श्री प्रहलाद सिंह	462/500	92.40%:	चतुर्थ
	कु. दीपा शर्मा	''मालती शर्मा	श्री ब्रजेश शर्मा	459/500	91.80%:	पंचम
कक्षा–12 बायो	कु. रानी रघुवंशी	''गिरजा रघुवंशी	श्री बालाराम	423/500	84.60%:	प्रथम
	कु. प्रियंका अग्रवाल	''ममता अग्रवाल	श्री विष्णु अग्रवाल	421/500	84.20%:	द्वितीय
	कु. महक जैन	''ज्योति जैन	श्री सुधीर जैन	381/500	76.20%:	तृतीय
	कु. विशाखा रघुवंशी	''पार्वती रघुवंशी	श्री जयराज सिंह	363/500	72.60%:	चतुर्थ
	कु. पुष्पलता	''सुनीता	श्री स्व. रूपचन्द	361/500	72.20%:	पंचम
कक्षा–12 कॉमर्स	शशांक खटवानी	''पूनम खटवानी	श्री जीवन खटवानी	430/500	86%	प्रथम
	रीतेश रघुवंशी	''जमनाबाई रघुवंशी	श्री भोगीराम	404/500	80.80%:	द्वितीय
	कु. प्रीति रघुवंशी	''श्याम बाई रघुवंशी	श्री महाराजसिंह	383/500	76.60%:	तृतीय
	कु. प्रियंका दाँगी	''हीराबाई दाँगी	''बहादुर सिंह	366/500	73.20%:	चतुर्थ
	कु. दीपना जोशी	''रेखा जोशी	''अशोक कुमार	363/500	72.60%:	पंचम

परीक्षा-परिणाम एक नजर में.....

कक्षा	कुल छात्र	सम्मिलित छात्र	उत्तीर्ण छात्र	अनुत्तीर्ण छात्र	पूरक	श्रेणी			प्रतिशत
						प्रथम	द्वितीय	तृतीय	
10	211	211	206	01	04	176	29	01	97%:
12(गणित)	147	147	141	02	04	123	18	–	95%:
12(जीव.)	22	22	21	–	01	17	04	–	95:%
12(कॉम.)	48	48	48	–	–	33	14	01	100%:

विज्ञान

राज्य-स्तरीय विज्ञान-प्रोजेक्ट-प्रतियोगिता के लिए चयन

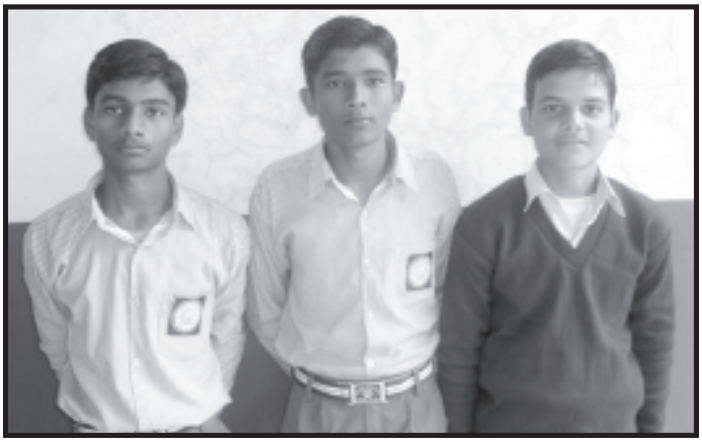

जिला-स्तरीय-राष्ट्रीय बाल-विज्ञान-कांग्रेस के अन्तर्गत विज्ञान-प्रोजेक्ट-प्रतियोगिता का आयोजन गत दिवस शा. उत्कृष्ट विद्यालय विदिशा में किया गया, जिसमें नवांकुर के छात्र/छात्राओं ने विभिन्न समस्याओं पर आधारित अपने-अपने प्रोजेक्ट दिखाये।

प्रतियोगिता के अन्तर्गत जूनियर वर्ग तथा सीनियर वर्ग बनाये गये थे, जिसमें जूनियर वर्ग से नवांकुर की इकाई डॉल्फिन के अभिषेक दाँगी ने ''भूमि पर जनसंख्या-दबाव'' विषय पर तथा कु.ध्वजा श्रीवास्तव ने ''पेड़-पौधे भूमि के संरक्षक'' विषय पर प्रोजेक्ट दिखाया।

सीनियर वर्ग के अन्तर्गत मयंक दुबे ने ''भूमि पर जनसंख्या दबाव'' विषय पर, संकेत नायक ने ''अपशिष्ट पदार्थो का प्रबन्धन'' विषय पर, अभिषेक पटेल ने ''जल-संरक्षण '' विषय पर, कु.अपूर्वा शर्मा ने ''ईंट-भट्टों से भूमि को हानि '' विषय पर, आनन्द गुप्ता ने ''वृक्षों का महत्त्व'' विषय पर, अपने शानदार प्रोजेक्ट दिखाये।

इनमें से जूनियर वर्ग से अभिषेक दाँगी तथा सीनियर वर्ग से मयंक दुबे तथा संकेत नायक का चयन राज्य स्तरीय-विज्ञान-प्रोजेक्ट प्रतियोगिता के लिए हुआ।

विज्ञान-मेले में नवांकुर ने चमक दिखलायी

विगत दिवस विज्ञान-मेले के अन्तर्गत विदिशा के उत्कृष्ट विद्यालय में विज्ञान मॉडल्स-प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें नवांकुर उ.मा. विद्यालय के 5 मॉडल्स विभिन्न विषयों पर सम्मिलित हुए। इसमें कृषि एवं प्रौद्योगिकी विषय पर कु.सिमरन वर्मा, कु.अंजुला मिश्रा एवं शुभम जैन तथा परिवहन एवं संचार-विषय पर दो मॉडल्स बने, जिनमें पहला संकेत नायक, सन्दीप दुबे एवं हिमांशु अग्रवाल ने तथा दूसरा श्रीकान्त नेमा, शैलेन्द्र कुशवाह एवं सौरभ विश्वकर्मा ने बनाया। शेष दो मॉडल्स हरित ऊर्जा पर थे, जिसमें एक अभिषेक पटेल, रचित श्रीवास्तव, यश सिंह गौर तथा दूसरा नीलेश सैनी, सचिन रघुवंशी एवं सुमित साहू ने मिलकर बनाया था।

इनमें से कु.सिमरन वर्मा, संकेत नायक एवं अभिषेक पटेल एण्ड ग्रुप के मॉडल्स का चयन राज्य-स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता के लिए किया गया। इन मॉडल्स के निर्माण में विद्यालय के अध्यापक श्री अविनाश डोंगरे व श्री योगेश चतुर्वेदी का छात्रों को सराहनीय मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

चले नवांकुर आगे-आगे

नवांकुर के विज्ञान की ओर बढ़ते कदम

अब मैं आपको क्या बताऊँ, नवांकुर का तो बस नाम ही काफी है, क्योंकि शिक्षा का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा, जहाँ नवांकुर के पद-चिह्न आपको न मिलें। शैक्षिक पर्यावरण में आप चारों ओर जहाँ भी नजर दौडायेंगे, वहीं आपको नवांकुर के परचम लहराते हुए दिखाई देंगे। आज मैं आपका ध्यान नवांकुर के विज्ञान की ओर बढ़ते कदमों की ओर ले जाने वाला हूँ। विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिवर्ष कई प्रतियोगिताएँ ब्लॉक-स्तर, जिला-स्तर, सम्भाग-स्तर, राज्य-स्तर तथा राष्ट्रीय-स्तर पर आयोजित की जाती हैं, और मुझे यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि विगत वर्षों में नवांकुर राष्ट्रीय स्तर तक अपनी दस्तक दे चुका है। विज्ञान-प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नवांकुर ने कई प्रतियोगिताओं में सहभागिता दी। सबसे पहले मैं आपको विज्ञान मॉडल्स प्रतियोगिता के बारे में बता रहा हूँ। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी किसी वर्तमान समस्या का समाधान मॉडल्स के रूप में विज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर प्रस्तुत करते हैं। इसमें नवांकुर से निम्नांकित विद्यार्थी सम्मिलित हुए-

क्र	नाम	विषय
1.	कु.सिमरन वर्मा, कु.अंजुला मिश्रा, शुभम जैन	- कृषि एव प्रौद्योगिकी
2.	संकेत नायक, सन्दीप दुबे, हिमांशु अग्रवाल	- बाढ़-प्रबन्धन
3.	श्रीकान्त नेमा, शैलेन्द्र कुशवाह, सौरभ विश्वकर्मा	- परिवहन एवं संचार
4.	अभिषेक पटेल, रचित श्रीवास्तव, यशसिंह गौर	- पवन-चक्की
5.	नीलेश सैनी, सुमित साहू, सचिन रघुवंशी	- घरों को प्राकृतिक रूप से ठण्डा करना।

इनमें से कृषि एवं प्रौद्योगिकी, बाढ़-प्रबन्धन एवं पवन चक्की पर बनाये गये मॉडल्स का चयन सम्भाग-स्तर पर हुआ। दूसरी प्रतियोगिता विज्ञान प्रोजेक्ट आयोजित हुई। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी सामाजिक समस्या का अध्ययन कर कई महीनों के अथक् प्रयासों के बाद स्वविवेक एवं वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर इसका समाधान खोजते हैं। इसमें सम्मिलित विद्याथियों के नाम निम्नांकित हैं-

क्र	नाम	विषय
1.	संकेत नायक, संकेत सचान, सन्दीप दुबे, हिमांशु अग्रवाल, शुभम बघेल	- अपशिष्ट प्रबन्धन
2.	मयंक दुबे, कार्तिक दुबे, रचित श्रीवास्तव विक्रम रघुवंशी, योगेन्द्र पाली	- भूमि पर जनसंख्या दबाव
3.	अभिषेक पटेल, अभिषेक रघुवंशी राहुल रैकवार, भीष्म रघुवंशी	- जल-संरक्षण
4.	अभिषेक दाँगी, अक्षय तिवारी, नितिन रिछारिया कु.संस्कृति दीक्षित, शान्तनु शर्मा,	- भूमि पर जनसंख्या दवाव
5.	कु.ध्वजा श्रीवास्तव, साहिल नायक, अभि रिछारिया,अनिरुद्ध शर्मा, आकाश रघुवंशी	- पेड़-पौधे मृदा संरक्षण
6.	आनन्द गुप्ता, मिलन श्रीवास्तव, पीयूष श्रीवास्तव, निखिल रघुवंशी, लोकेन्द्र रघुवंशी	- पेड़-पौधे मृदा-संरक्षण
7.	कु. अपूर्वा शर्मा, कु. अनामिका परमार, कु. अंजन गुप्ता,कु. सलोनी अग्रवाल, कु.चारु भारद्वाज	- ईंट भट्टों से भूमि की हानि।

इनमें से संकेत नायक एण्ड ग्रुप तथा मयंक दुबे एण्ड ग्रुप के प्रोजेक्ट का चयन राज्य-स्तर के लिए हुआ। अगली प्रतियोगिता विज्ञान-क्विज हुई । इसमें विद्याथियों से विज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। इसमें भी नवांकुर ने बाजी मारी और अभिषेक पटेल तथा कार्तिक दुबे का चयन राज्य-स्तर पर हुआ। अब मैं आपको विज्ञान-मन्थन के बारे में बता रहा हूँ। यह म.प्र.सरकार द्वारा संचालित योजना है, जिसमें म.प्र.स्तर पर मेरिट के आधार पर विद्यार्थियों का चयन किया जाता है। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नवांकुर से इस यात्रा में विदिशा जिले में सर्वाधिक 14 विद्यार्थी सम्मिलित हुए, जिनमें कक्षा-9 के राहुल अहिरवार व कु. शिवानी आचवल ने ग्वालियर तथा दिल्ली, कक्षा-10 से ऋषभ दुबे, नीलेश सैनी ने नागपुर व हैदराबाद, कक्षा-11 से संजय रघुवंशी, प्रदीप राजपूत ने पुणे व बैंगलूरु तथा कक्षा-12 से कु.अदिति तिवारी, आकाश मीणा, कु.अनीता अहिरवार, मानस लुखे, कु.निशा तिवारी, कु.रीता मरावी, कु.साक्षी जैन, आशीष शर्मा ने चैन्नै व कोयम्बटूर स्थित स्थानों का भ्रमण किया। इन सभी विद्यार्थियों ने एक बार फिर साबित कर दिया कि 'चले नवांकुर आगे-आगे, पीछे सारी दुनिया भागे'।

सभी विद्यार्थियों को विद्यालय-परिवार की ओर से बहुत-बहुत बधाई ! विद्यालय आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

-योगेश चतुर्वेदी

व्याख्याता भौतिक शास्त्र

नवांकुर सांस्कृतिक गतिविधियाँ-2010

यह विद्यालय के छात्र/ छात्राओं के लिए अत्यन्त ही गौरव की बात है कि हमारा विद्यालय केवल नगर ही नही, अपितु जिले में एक विशेष स्थान रखता है। नवांकुर की पहचान खेलकूद, बोर्ड-परीक्षा परिणामों के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण विगत वर्षों में बढ़ी है।

जब भी नगर या आसपास के क्षेत्रों में किन्हीं मन्त्री महोदय या मुख्यमन्त्री महोदय का आगमन होता है, तो नवांकुर का नाम प्रथम प्राथमिकता पर लिया जाता है और नवांकुर अपना योगदान प्रशासन की अपेक्षानुसार देता है।

सत्र-2010-11 (मई-जून माह)में ग्राम पचमा में माननीय मुख्यमन्त्री के आगमन के समय विद्यालय के गायन-दल के छात्र/ छात्राओं ने लगभग पाँच घण्टों तक अपने मधुर गीतों से जनता को बाँध रखा था, स्वतन्त्रता-दिवस के पावन अवसर पर सामूहिक कार्यक्रम में एक विशिष्ट नाटिका प्रस्तुत कर विशेष पुरस्कार प्राप्त किया था। इसके पश्चात् दशहरा-उत्सव के कार्यक्रम में राजस्थान का दीप-नृत्य तथा बुन्देलखण्ड का प्रसिद्ध लोकनृत्य राई प्रस्तुत कर दर्शकों को स्तब्ध कर दिया था। उल्लेखनीय है कि राई के बारे में ऐसी भ्रान्ति है कि यह लोकनृत्य अश्लीलता लिये होता है, किन्तु विद्यालय की छात्राओं ने इस नृत्य को इतने शालीन और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया कि लोग सन्नाटे में आ गये। मात्र विद्यालय की छात्राओं को ही नकद पुरस्कारों की प्राप्ति हुई। इस प्रस्तुति ने जो भ्रान्ति थी, वह दूर कर दी, क्योंकि इस ''राई'' के नाम से भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं के पालक बिदक जाते हैं, किन्तु उन पालकों ने स्वयं नृत्य को सराहा। म.प्र. स्थापना -दिवस-समारोह(1 नवम्बर) के सामूहिक आयोजन में बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध लोकनृत्य ''बधाई'' को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया और अभी विगत दिवस (28 नवम्बर) नेहरू युवा-केन्द्र, विदिशा द्वारा आयोजित विकासखण्ड-स्तरीय कार्यक्रम में एक राष्ट्रीय गीत तथा पर्यावरण पर आधारित लोक-गीत की आकर्षक प्रस्तुति विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने दी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इन दोनों प्रस्तुतियों में गायन के साथ-साथ हारमोनियम तथा ढोलक-वादन कु. विनीता देवधर कक्षा-12 (गणित) व राहुल कुशवाह कक्षा-10 ने किया था।

जो छात्र-छात्राएँ इन सांस्कृतिक गतिविधियों में स्वयं ही आगे आकर भाग लेते हैं और प्रतिदिन कड़ा अभ्यास करते हैं और विद्यालय को तथा नगर को गौरवान्वित करते हैं, उन्हें मैं उज्ज्वल भविष्य की शुभ-कामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि अन्य छात्र-छात्राएँ भी इन गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

इसमें नवांकुर संगीत-विद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्रयाग संगीत-समिति, इलाहाबाद से सम्बन्द्ध यह संगीत विद्यालय 01 अगस्त, 2008 को प्रारम्भ हुआ और इसमें गायन के साथ-साथ हारमोनियम तथा तबला-वादन की शिक्षा दी जाती है। कक्षाएँ सायं 05 बजे से 07 बजे तक (जुलाई से जनवरी तक) तथा ग्रीष्मावकाश में प्रात: 08 बजे से 11 बजे तक लगायी जाती हैं। फरवरी व मार्च में अवकाश रहता है। इसमें विद्यालय के अतिरिक्त, अन्य विद्यार्थी भी प्रवेश ले सकते हैं, क्योंकि इस संगीत-विद्यालय की स्थापना का मूल उद्देश्य गंजबासौदा नगर में शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देना है।

जहाँ नवांकुर हर-क्षेत्र में अपना परचम लहरा रहा है, वहीं स्काउट/ गाइड के क्षेत्र में भी पीछे नहीं। नवांकुर स्काउट/गाइड के छात्रों ने सदा से अपनी पहचान बना रखी है और इसी का परिणाम है कि विगत माह नवांकुर के चार छात्रों को स्काउट राष्ट्रपति-पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन छात्रों में मनीष दुबे, अक्षय दीक्षित, हर्षद भारद्वाज एवं राघवेन्द्र सिंह दाँगी के नाम शामिल हैं। इस पुरस्कार के अन्तर्गत परीक्षण-शिविर में प्रतिवर्ष म.प्र. के होनहार स्काउट/गाइड को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित समारोह में दिल्ली में पुरस्कृत किया जाता है। विगत वर्ष नवांकुर के स्काउट तरुण लाहौरी, नीलेश रघुवंशी, रविन्द्र दाँगी, निखिल रघुवंशी,शैलेन्द्र कुशवाह एवं अमृतांश कटियार को राज्य-स्तर पर राज्यपाल-पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था। स्काउट के छात्रों को राष्ट्रपति पुरस्कार तक पहुँचने के लिए सबसे पहले स्कूल में संचालित दल में प्रवेश लेना आवश्यक होता है। उसके बाद दीक्षा, प्रथम सोपान, द्वितीय सोपान,तृतीय सोपान एवं राज्यपाल-पुरस्कार तक की शिक्षा पूर्ण करना आवश्यक होता है।

नवांकुर में स्काउट-दल संचालित है, जिसका नाम शिवाजी दल है। इसमें अधिकतम 32 स्काउट हैं एवं वर्तमान में स्काउट शिक्षक रामबाबू पांचाल हैं।

- शैलेन्द्र कुमार पिंगले 'सुमन'
(प्रभारी सांस्कृतिक गतिविधियाँ)

अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के अन्तर्गत नवांकुर में नि:शुल्क शिक्षा का लाभ ले रहे विद्यार्थी

कैरियर

नौकरियों का आसमान

भारतीय अर्थव्यवस्था के लगातार विकास के साथ उड़ान-उद्योग की प्रगति भी सातवें आसमान पर है । इस वजह से इसके विविध क्षेत्रों में काम करने वालों की माँग में बढ़ोत्तरी हो रही है। कुछ साल पहले इस क्षेत्र में काम करने के बहुत कम अवसर थे, लेकिन हाल में सस्ती हवाई दरों के साथ बहुत-सी घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय एयरलाइंस के आ जाने की वजह से हर तरह के अवसरों में अचानक उछाल आया है। इस समय भारत में लगभग हर साल लगभग 300 विमान करीब 35 बिलियन लोगों को यात्रा करवा रहे हैं । सन् 2020 तक इसमें 120 बिलियन रुपये का निवेश होने और लगभग 3 से 4 बिलियन लोगों को जॉब दिलाने के अनुमान हैं। इस उद्योग में काम के अनेक अवसर मौजूद हैं।

1. **निर्माण-उद्योगः**- इस क्षेत्र में हवाईजहाज, मिसाइल और अन्तरिक्ष यान की डिजाइन, निर्माण-ऑपरेशन और विश्लेषण का काम शामिल है। यह क्षेत्र एयरोनॉटिकल इंजीनियर्स के लिए है। काम और अनुभव के अनुसार एक एयरक्राफ्ट मेण्टेनेंस इंजीनियर हर महीने 1,00,000 रु. तक कमा सकता है।

2. **एयरलाइनः**- एयरलाइन के पास वायुयान होते हैं और उनकी बहुत-सी अन्य एयरलाइन से आपसी साझेदारी होती है। इसके अवसरों में फ्लाइट अटेण्डेण्ट एयर होस्टेस, केबिन क्रू फ्रण्टडेस्क जॉब्स, एयरलाइन ग्राउण्ड क्रू आदि खास हैं। इसके अलावा, एयरपोर्ट मैनेजर, फिक्स्ड बेस ऑपरेटर मैनेजर, लाइन पर्सन, स्टेशन मैनेजर, शिड्यूलिंग कॉर्डिनेटर फ्लाइट डिस्पेचर, एयर ट्रैफिक कण्ट्रोलर आदि भी यहाँ अनेक अवसर हैं।

एयरहोस्टेस के प्रशिक्षण के लिए उम्मीदवार को कम-से-कम 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण या स्नातक के बाद होटल मैनेजमेण्ट या टूरिज्म मैनेजमेण्ट में डिप्लोमा किया हुआ होना चाहिए। उसकी आयु 25 साल से कम होनी चाहिए और वजन ऊँचाई के अनुसार होना चाहिए।

फ्रण्टडेस्क के कार्यों में फ्लाइट की बुकिंग सम्भालना, जाँच-प्रक्रिया, टिकट बुकिंग, फ्लाइट निरस्त होने पर यात्रियों को अन्य सीट आबण्टित करना और यह देखना कि फ्लाइट उपलब्ध है या नहीं आदि शामिल हैं । इसके लिए 12 वीं या स्नातक होना जरूरी है।

फ्लाइट अटेण्डेण्ट का कार्य यात्रियों की सुरक्षा व आराम का ध्यान रखना है। इसके लिए 12 वीं के बाद विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

टिकिट एजेण्ट फ्लाइट शिड्यूल किराया आदि से सम्बन्धित सवालों के जवाब देने, फोन से रिजर्वेशन, किराये का हिसाब रखने, टिकिट देने आदि का काम करते हैं। किसी विषय में स्नातक इसके योग्य माने जाते हैं।

3. ***पायलटः***- वैमानिकी पायलट के लिए कई तरह के अवसर हैं व हर एक के लिए जरूरी योग्यता, फायदे व चुनौतियाँ भी अलग हैं। इसमें वेतन और सुविधाएँ भी कम्पनियों पर निर्भर हैं। इनमें से किसी तरह का पायलट बनने के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कुछ पायलट यह प्रशिक्षण सेना में प्राप्त करते हैं, जबकि कुछ अन्य अकादमियों से। सामान्यत: पायलट के काम के लिए आपके पास एक कॉमर्शियल पायलट का प्रमाण-पत्र, इंस्ट्रूमेंट और मल्टी इंजन रैटिंग्स होना जरूरी है।

पायलट का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पीसीएम के साथ 12वीं पास होने के अलावा मेडीकल फिटनेस की जरूरत होती है, लेकिन सफलता सभी ग्राउण्ड विषयों को पास करने के लिए की जाने वाली कठिन मेहनत व ग्राउण्ड के हुनर पर निर्भर है। आपकी सेहत और मेहनत की परीक्षा प्रवेश के समय शुरू होती है, जो अन्त तक जारी रहती है। उड़ान से पहले आपको डीजीसीए से मान्यता प्राप्त एयरफोर्स के सेण्ट्रल मेडिकल एस्टेब्लिसमेण्ट से मेडिकल पास करना होता है। सुरक्षा का कोई शार्टकट न होने की वजह से आपको सेवानिवृत्ति तक कठिन मेहनत करनी होती है और किताबों से जुड़ा रहना पड़ता है। 60 साल तक हमेशा फिट रहना और लगातार मेडिकल परीक्षण से गुजरना होता है। यदि आप किसी कमर्शियल एयरलाइन से जुड़े हैं, तो सूटकेस के साथ जीना सीख लीजिए, क्योंकि ज्यादातर आप घर से बाहर ही रहेंगे। इसके अलावा, यदि आप पढ़ाई में तेज हैं और आपमें उड़ान का हुनर है, तो मैं नहीं मानता कि आपको किसी तरह की समस्या आने वाली है।

-मनीष मैथिल, उ.श्रे.शि.

बैंकिंग में कैरियर

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे विशाल क्षेत्रों में से एक है और लिपिक-वर्ग इसकी सबसे बड़ी पेशेवर संख्या है। इसे बैंकिंग-तन्त्र की रीढ़ कहा जाता है। इस तन्त्र का यह महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रोजगार के विकल्प के रूप में भी खास स्थान रखता है।

इसमें भर्ती के लिए प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में रिक्तियाँ निकाली जाती हैं। भारत के सभी सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों में भर्ती सम्बन्धित बैंक द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा और और साक्षात्कार के आधार पर की जाती है। इसके लिए अपनी जरूरत के अनुसार ये बैंक समय-समय पर विज्ञापन विभिन्न समाचार-पत्रों में प्रकाशित करवाते हैं । बारहवीं पास करने और 18 साल की उम्र पूरी करने के बाद इसके लिए कोशिश की जा सकती है। इसके लिए आवेदन करना भी आसान है। आवेदन निर्धारित तिथि तक सम्बन्धित बैंक की वेबसाइट पर उपलब्ध रहते हैं, जहाँ ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। लिखित परीक्षा में योग्य पाये गये उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। अन्तिम रूप से चयन होने पर कुछ जरूरी औपचारिकताओं के बाद प्रोवेशन पर भेजा जाता है।

सभी बैंक लिपिक की परीक्षाओं में सामान्य अंग्रेजी, सामान्य गणित, रीजनिंग, लिपिकीय अभियोग्यता और सामान्य ज्ञान के सवाल होते हैं। यदि पहले चार के सवालों का अच्छा अभ्यास करें, तो इन्हें आसानी से पास किया जा सकता है। इसके अलावा, सभी बैंकों की परीक्षा प्रणाली समान होती है। परीक्षा के एक भाग रीजनिंग में भाषिक व अभाषिक दोनों तरह की रीजनिंग के सवाल होते हैं। इसमें सामान्य असमानता, सादृश्यता, खाली जगह भरना, समस्या-समाधान, विश्लेषण, निर्णय, दृश्य याददाश्त, अन्तर-योजना चित्रों का वर्गीकरण, अंकगणितीय श्रेणी,अक्षर श्रेणी, शब्दावली, वाक्य पूरा करना, पर्यायवाची, विलोम, कॉम्प्रिहेंशन आदि से सवाल पूछे जाते हैं। अंक गणित के सवाल, पूर्ण संख्याओं की गणना, दशमलव व भिन्न और अंकों के बीच सम्बन्ध से सवाल पूछे जाते हैं।

आय सीमा- उम्मीदार को कम-से-कम 18 साल और 28 साल से ज्यादा का नहीं होना चाहिये, परन्तु कुछ बैंकों में 20-25 साल और 21 से 30 साल के उम्मीदार मान्य होते हैं। इस सूची में शैक्षणिक योग्यता व परीक्षा से जुडी जानकारी दी जा रही है। हालाँकि ये इनके द्वारा प्रकाशित विज्ञापन व अन्य पुख्ता सन्दर्भों के आधार पर तैयार की गई है, लेकिन आने वाली भर्ती की जरूरत के मुताबिक बदल सकती हैः-

बैंक	***शैक्षणिक योग्यता***	***परीक्षा की विषयवस्तु***
पंजाब नेशनल बैंक	50 फीसदी के साथ स्नातक व एमएस ऑफिस	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित, मार्केटिंग और कम्प्यूटर
इण्डियन ओवरसीज बैंक	45 फीसदी के साथ स्नातक तथा के साथ 12वीं और कम्प्यूटर ज्ञान	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित और लिपिकीय अभिरुचि विवरणात्मक परीक्षा सामाजिक -आर्थिक विकास व संवाद-कुशलता
बैंक ऑफ बड़ौदा	60 फीसदी के साथ 12वीं या 50 फीसदी के साथ स्नातक	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित, लिपिकीय अभिरुचि सामाजिक-आर्थिक व बैंकिंग जागरूकता और कम्प्यूटर
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया	स्नातक या 60 फीसदी के साथ 12 वीं	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित, अभिरुचि और सामान्य ज्ञान/कम्प्यूटर
एसबीआई के सहयोगी बैंक	40 फीसदी के साथ स्नातक या 60 फीसदी के साथ 12वीं	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, सामान्य ज्ञान, तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित, मार्केटिंग अभिरुचि और कम्प्यूटर ज्ञान
सिण्डीकेट वैंक (प्रोबेशनरी क्लर्क)	स्नातकोत्तर में 60फीसदी अंक व कम्प्यूटर या 60 फीसदी अंक के बीसीए और 10वीं तक क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान	साक्षात्कार
केनरा बैंक	स्नातक या 60 फीसदी के साथ 12वीं	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित और लिपिकीय अभिरुचि विवरणात्मक परीक्षा
इलाहाबाद बैंक	स्नातक या 55 फीसदी के साथ 12वीं	*वस्तुनिष्ठ परीक्षा,* तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित और लिपिकीय अभिरुचि और कम्प्यूटर, विवरणात्मक परीक्षा
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	स्नातक या 60 फीसदी के साथ 12वीं और कम्प्यूटर व संबंधित राज्य भाषा की जानकारी	वस्तुनिष्ठ परीक्षा तर्कशक्ति,गणित और लिपिकीय अभिरुचि और अंग्रेजी विवरणात्मक परीक्षा
ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स	स्नातक या 50 फीसदी के साथ 12वीं	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति,गणित और लिपिकीय अभिरुचि और अंग्रेजी विवरणात्मक परीक्षा
विजया बैंक	स्नातक या 50 फीसदी के साथ 12वीं और कम्प्यूटर प्रवीणता	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति,गणित और लिपिकीय अभिरुचि और अंग्रेजी विवरणात्मक परीक्षा
कॉर्पोरेशन बैंक	स्नातक या 55 फीसदी के साथ 12वीं	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, अंग्रेजी,गणित और लिपिकीय अभिरुचि
बैंक ऑफ महाराष्ट्र	स्नातक या60 फीसदी के साथ 12वी और कम्प्यूटर	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, गणित,लिपिकीय अभिरुचि अंग्रेजी और कम्प्यूटर

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया	स्नातक या 50 फीसदी के साथ12वी 60 फीसदी के साथ 10वीं	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, अंग्रेजी, गणित, लिपिकीय अभिरुचि विवरणात्मक परीक्षा
देना बैंक	स्नातक या 60 फीसदी के साथ12वी	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, तर्कशक्ति, गणित, लिपिकीय अभिरुचि और अंग्रेजी विवरणात्मक परीक्षा
यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया रोकड़िया सह-लिपिक	65 फीसदी के साथ 12वीं व कम्प्यूटर	वस्तुनिष्ठ परीक्षा, विवरणात्मक परीक्षा
सिण्डीकेट बैंक (प्रोबेशनरी लिपिक)	स्नातक व विण्डोज या एमएस ऑफिस या कम्प्यूटर में प्रमाणपत्र/डिप्लोमा या 60 फीसदी के साथ बीसीए या एक विषय के रूप में कम्प्यूटर-सहित स्नानक और 10 वीं राज्य/क्षेत्रीय भाषा का अध्ययन या राज्य/क्षेत्रीय भाषा/ मातृभाषा होनी चाहिए।	साक्षात्कार द्वारा चयन

कम्प्यूटर के क्षेत्र में कैरियर

वर्तमान में कम्प्यूटर की छोटी-बड़ी सभी डिग्रियों का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। ऐसा कोई भी जॉब नहीं है, जिसमें कम्प्यूटर की उपयोगिता न हो। चाहे जॉब Centrel Govt.का हो या State Govt. का हो या प्रायवेट सेक्टर का हो। ऐसे में कम्प्यूटर से सम्बन्धित कोर्सेस की जानकारी होना आवश्यक है। कुछ डिप्लोमा एवं डिग्री कोर्सेस की जानकारी यहाँ दी जा रही हैं:-

कम्प्यूटर से जुड़े कुछ प्रमुख स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमः-

देश में कई कम्प्यूटर पाठ्यक्रम शासकीय और अशासकीय क्षेत्र में चलाये जा रहे हैं। Polotechnic कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में कम्प्यूटर के डिप्लोमा पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। कम्प्यूटर के क्षेत्र में संचालित पाठ्यक्रम में बेचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (B.C.A.) और मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (M.C.A.) पाठ्यक्रम प्रमुख हैं।

रोजगार के अवसर :-

B.C.A. या M.C.A. के उपरान्त रोजगार की बहुत सम्भावनाएँ है। राष्ट्रीय-बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का देश-विदेश में कम्प्यूटर विशेषज्ञों की हमेशा आवश्यकता रही है। भारतीय सेनाओं में अधिकारी बनने की इच्छा रखते हैं, तो वहाँ भी उसके लिए अवसर है। भारतीय थल-सेना, वायु-सेना, नौसेना में, कम्प्यूटर में दक्ष युवक-युवतियों की, विशेष भर्ती होती है।

1. **बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (B.C.A)**
   योग्यता 10+2 (विज्ञान वर्ग से) पाठ्यक्रम अवधि-3 वर्ष।
2. **मास्टर ऑफ कम्प्यूटर (M.C.A.)**
   योग्यता 10+2 पाठ्यक्रम अवधि-2 वर्ष।

प्रमुख संस्थाएँ - दोनों पाठ्यक्रम रेगुलर तथा पत्राचार दोनों माध्यम से उपलब्ध हैं। कुछ प्रमुख संस्थानों की सूची निम्नांकित है-

इन्दौर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय- नयी दिल्ली-दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल विश्वविद्यालय, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, सागर- डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, आगरा- डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

मास्टर ऑफ कम्प्यूटर (M.C.A.) पाठ्यक्रम में प्रवेश- मध्यप्रदेश व्यावसायिक परीक्षा मण्डल (व्यापम)भोपाल, मध्यप्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में चलाये जा रहे (M.C.A.)पाठ्यक्रमों के लिए प्रतिवर्ष एक प्रवेश-परीक्षा आयोजित करता है, जिसमें चयनित छात्र मेरिट के आधार पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से (M.C.A.) पाठ्यक्रम की डिग्री प्राप्त करते हैं। (M.C.A.) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु 12 वीं स्तर तक गणित होना आवश्यक है। M.C.A. में 6 वर्षीय पाठ्यक्रम (12वीं के पश्चात्) इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में उपलब्ध है।

कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं नेटवर्किंग इंजीनियरिंग - वर्तमान समय में कम्प्यूटर का उपयोग दिन -प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। आज कम्प्यूटर हमारे दैनिक जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। सभी शासकीय-अर्द्धशासकीय एवं निजी उपक्रमों में कम्प्यूटर का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं नेटवर्किंग क्षेत्र में रोजगार एवं स्वरोजगार की बहुत सम्भावनाएँ हैं, कम्प्यूटर-क्षेत्र में आयी क्रान्ति जैसे इण्टरनेट, मोबाइल फोन, ए.टी.एम. आदि के कारण कम्प्यूटर के कई महत्त्वपूर्ण भागों को सुधारने के लिए दक्ष एवं कुशल रिपेयरिंग इंजिनियरों की आवश्यकता हमेशा रहती है। हार्डवेयर एवं नेटवर्किंग के साथ रिपेयरिंग सीखना भी आवश्यक है।

प्रमख संस्थानः- कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, भोपाल-जेटकिंग, 101-104, राधाकृष्ण कॉम्प्लेक्स, गीताभवन इन्दौर। आई.आई.टी. दिल्ली।

कम्प्यूटर आधारित कुछ प्रमुख कैरियर निम्नांकित हैं- डाटा एण्ट्री सर्विस, काल सेण्टर एवं आउट सोर्सिंग प्रोग्राम पैकेज के डिस्ट्रीब्यूटर, स्टॉक मार्केट, इलेक्ट्रॉनिक से जुड़ी बुक कीपिंग सर्विस, कम्प्यूटर पर ज्योतिष, ब्रोशर्स बनाना, मेलिंग सर्विस, टेम्स रिटर्न सेवा, बुक इण्डेक्सिंग सर्विस, टाइप सेटिंग।

- ***ओ.पी.श्रीवास्तव***, कैरियर सम्पादक

नवांकुर कैरियर प्रकोष्ठ का प्रथम दौरा उदयपुर में

विगत दिनों शा. उ. मा. विद्यालय, उदयपुर द्वारा स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कैरियर कार्यक्रम में विद्यालय के कक्षा 9 से 12 तक के सभी संकायों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के कैरियर निर्देशन हेतु नवांकुर केरियर प्रकोष्ठ का दल पहुँचा, जिसमें विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य व हाईस्कूल प्रभारी श्री ओ. पी. श्रीवास्तव, व्याख्याता रसायन शास्त्र संदीप रावत, व्याख्याता भौतिक शास्त्र श्री योगेश चतुर्वेदी एवं व्याख्याता वाणिज्य एवं रासेयो कार्यक्रम अधिकारी श्री हरिओमशरण शर्मा उपस्थित रहे। बच्चों के केरियर निर्देशन के लिये ग्राम मसूदपुर की रसायन शास्त्र अध्यापिका कु. कृष्णा शर्मा के साथ–साथ विद्यालय के प्राचार्य श्री जेजोरीकर भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सभी अतिथियों ने माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप–प्रज्जवलन से किया तत्पश्चात विद्यालय परिवार एवं छात्र प्रतिनिधि द्वारा उपस्थित सभी अतिथियों का अक्षत–रोली एवं पुष्पहार से स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित श्री ओ. पी. श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को रेल्वे, बैंकिंग, पटवारी, लोकसेवा आयोग एवं विभिन्न कैरियर संबंधी रोजगार योजनाओं से परिचित कराया। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद श्री योगेश चतुर्वेदी ने इंजीनियरिंग के क्षेत्र में में आगे बढ़ने व इंजीनियरिंग की जटिल परीक्षाओं की विस्तृत जानकारी बड़े ही सरल व सहज तरीके से दी, जिससे विद्यार्थी काफी प्रभावित हुये। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री हरिओमशरण शर्मा ने क्रमबद्ध रूप से इग्नू एवं भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी दी साथ ही केरियर के क्षेत्र में उनसे होने वाले लाभों से अवगत कराया। कार्यक्रम मे ंमुख्य अतिथि के रूप में मौजूद कु. कृष्णा शर्मा ने कैरियर चयन के सही निर्धारण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये विद्यार्थी काल से ही सटीक प्रयासों की अपील की। विद्यालय के प्राचार्य श्री जेजोरीकर ने सभी विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं तथा अपने अनुभवों को सभी से बाँटा। इस अवसर पर कैरियर कार्यक्रम का संचालन कर रहे श्री संदीप रावत ने अपने प्रेरक कथा प्रसंग तथा दोहों के माध्यम से बच्चों को कैरियर के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन कर रहे विद्यालय के शिक्षक व कैरियर मार्गदर्शन योजना के प्रभारी श्री शंभूसिंह जी ने शिक्षक की परिभाषा को परिभाषित करते हुये शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर विषय पर टिप्पणी की। कार्यक्रम के अंत में नवांकुर विद्यालय के प्राचार्य श्री दीक्षित जी के निर्देशानुसार, कैरियर प्रकोष्ठ की ओर से समय–समय पर कैरियर साहित्य विद्यार्थियों के हितार्थ उपलब्ध कराने की घोषणा की गई। इस प्रकार नवांकुर कैरियर प्रकोष्ठ अपनी योजना की शत–प्रतिशत सफलता के साथ वापिस लौटा।

–सम्पादक

ग्रन्थ-समीक्षा

अक्षर ज्ञान पयोधि, एक अद्भुत महाकाव्य

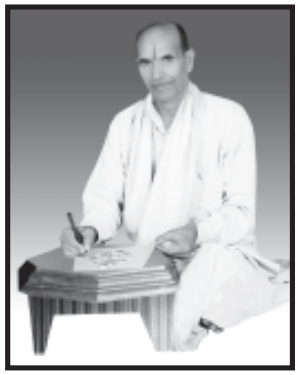

अक्षर ज्ञान-पयोधि एक अद्भुत महाकाव्य है। यह ग्रन्थ सर्वाधिकार रचना के अधीन सुरक्षित है। इसके रचनाकार पं. बालमुकुन्द दीक्षित निवासी गंज बासौदा हैं। हिन्दी भाषा की देवनागिरी लिपि का स्वर-व्यंजन-युक्त यह एक वर्णात्मक महाकाव्य है, जो 'अ' से 'ज्ञ' तक महिमा की अमृतमय ज्ञान-पयोधि है।

9 सर्गों में विभाजित यह ग्रन्थ 7977 चौपाइयाँ, 860 दोहे, 1098 सोरठे, 81 छन्द-युक्त होते हुए, अपने आप में कुल 10016 पद्य समाहित किये हुए है। रचनाकार ने यह अद्भुत महाकाव्य मात्र डेढ़ साल के अन्तराल में संचित किया है। 511 पृष्ठीय यह महाकाव्य धर्म, संस्कार, शिक्षा, पर्यावरण, कर्म, धार्म आदि असंख्य विषयों की पद्यमयी अनुपम व्याख्या समाहित किये हुए है। उल्लेखनीय है कि पं. बालमुकुन्द दीक्षित ने इस महाकाव्य की रचना का प्रकाशन स्वयं के व्यय पर करवाया है। इनके इस ग्रन्थ का विमोचन विश्व हिन्दू-परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जी सिंहल द्वारा समारोहपूर्वक किया गया। पण्डित जी के इस अनूठे ग्रन्थ ने नगर व प्रदेश के साहित्य-क्षेत्र में एक अद्भुत ऊर्जा का संचार किया है। पण्डित जी ने भारत की अखण्डता पर दृष्टिपात् करते हुए निम्न पंक्तियों के साथ अपने ग्रन्थ की शुरूआत की है-

अखण्ड राष्ट्र प्रिय भारत देशा। अद्भुत अनुपम ज्ञान विशेषा।।

श्री दीक्षित जी ने विद्या की महिमा को बताते हुए लिखा है-

विद्या धन परदेश। मातु पिता भ्राता समहिं। दीक्षित कहुँ नहिं क्लेश। घर बाहर सब यहुँ पूजहिं।।

विद्या चोरी भी नहिं जाई। डाकू भी नहिं लूटहिं पाई। विद्या बाँटनि से बढ़ि भाई। विनु खरचै भारी घटि जाई।।

पण्डित जी ने स्वयं अपने ग्रन्थ का वर्णन करते हुए लिखा है-

चौपाई - अक्षर ज्ञान पयोधि सुवर्गा। सुधा समाहित रस नव सर्गा।। चौपाई पद ग्रन्थ वृहत्तर। सात सहस नव शतक सतत्तर।।

दोहा - दोहा आठ सौ साठहि। जग जन मंगल हेत।। सोरठा एक सहस्र अरु। अट्ठानवें शुभ चेत।।

चौपाई - मधुर मृदुल इक्यासी छन्दह। महायोग दस हजार सोलह।। आहट अदभुद काल जयी की। महाकाव्य नव बोध मयी की।।

गौरतलब है कि पण्डित जी के इस उल्लेखनीय कार्य के लिए उनके साक्षात्कार का प्रसारण सहारा समय चैनल पर हो चुका है तथा उनके इस ग्रन्थ का मुद्रण कार्य नवांकुर के भूतपूर्व छात्र सतेन्द्र जैन, किट्टू स्क्रीन प्रिण्टर्स, गंजबासौदा द्वारा किया गया है। नवांकुर-परिवार पण्डित जी को बहुत-बहुत बधाई देता है। साथ ही, छात्र/छात्राओं से अपील की जाती है कि इस अथाह ज्ञानसागर का पठन करें, जिसकी प्रतियाँ नवांकुर-पुस्तकालय में उपलब्ध है।

-सम्पादक

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक 'उपहार' कविता-संग्रह रचनाकार नन्नूलाल बघेल द्वारा रचित है, जो ग्राम गुरोद के निवासी हैं। अपनी इस पुस्तक में बघेल जी ने अत्यन्त सरल, सहज व क्षेत्रीय भाषा में बड़े ही ज्ञानात्मक ढंग से दिग्दर्शन कराया है। उनकी इस पुस्तक में ईश-वन्दना के साथ नारी-महिमा, तुलना, स्वागत, सुरापान, खोट, विपरीत, इन्कार, पूँछ, कर्जदार, नया दौर नहीं चाहिये, अटल प्रतिज्ञा, दौलत का नशा, वीर सिपाही, नकली की पहचान, मरीज,अन्तरा, सुरा-प्रेमी, दर्शन दिखा, राजनीति, खाना-पीना, भ्रष्टाचारी, दोस्ती, भजन की महिमा, पाठशाला,ज्ञान - गंगा, मस्ती, स्वार्थी, शराबी के लक्षण, आँख का कमल, आलस, सहारा बँटवारा, पैसा, नेतों के ठाठ, व्यसन, अनमोल समय, प्रभु-कृपा सच्चा मित्र, गाँधी के देश में, सदा दीवाली जैसे विषयों पर काव्य-रचना की है। उन्होंने अपने इस काव्य-संग्रह में समाज के हर गम्भीर पहल को छुआ है। यहाँ उनकी कविताएँ आप सभी के समक्ष प्रस्तुत हैं-

सुरापान

बल, विद्या, बुद्धि घटे, घटे मान सनमान,
रोग बढ़े तन क्षीण हो, करे सुरा का पान।
धूम्रपान नर जो करे, और चिलम का शौक,
तम्बाकू त्यागे नहीं, देखे अगला चौक।
नेत्र की ज्योति घटे, होय कान से बहरा,
खाँसी के संग कफ करे, दिल में सदमा गहरा।
पीने को पी लई, बाखर करी खराब,
औंधे हो हौं-हौं करें, पी गये खूब शराब।
पी गये खूब शराब, आई पिटने की नौबत,
बुरा है ऐसा काम, गलत है सोहबत।।

खोट

सावधान होकर रखो, फूँक फूँक कर पैर,
राहों में काँटे बिंधे, नहीं आपकी खैर।
काले दिल के लोग हैं, स्वारथ की बातें,
चिकनी-चुपड़ी सामने, पीछे करते घातें।
इन सबसे बचकर रहो, कोई न देता साथ,
बचके रहो कुसंग से, दोनों जोड़ों हाथ।
भली दोस्ती दूर की, सुनो खोलकर कान,
कपटी मित्र न कीजिये, सीख हमारी मान।
भाई इस संसार में रहो, हमेशा मौन,
सिर्फ इतना ही बोलिए, ज्यों आटे में नोन।

एक परिचय : साहित्यकार मंच

जहाँ हम लगातार आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं, वहीं कुछ विभूतियाँ ऐसी भी हैं, जो हमें समाज से जोड़े हुए हैं। जी हाँ, मैं बात कर रहा हूँ , साहित्कार- मंच गंजबासौदा की। साहित्यकार-मंच ऐसा मंच है, जिसने अपने विचारों से न केवल हमारे प्रेरणास्रोत कवियों व रचनाकारों को जोड़े रखा है, बल्कि युवा रचनाकारों को भी जुड़ने का अवसर प्रदान किया है। तो आइये, इस साहित्यकार मंच के कुछ सदस्यों से उनकी कविताओं के माध्यम से जुड़ते हैं-

गिद्ध-चाल

प्रसिद्ध था एक नगर,
सुख, शान्ति, समृद्धि, भाईचारे के लिए।
वहाँ रहने आया एक गिद्ध-परिवार।
कुछ ही दिनों में होने लगी,
गिद्ध-परिवार के सदस्यों की एक-एक कर मृत्यु,
क्योंकि उन्हें नहीं मिल पा रहा था,
गर्म एवं ताजा गोश्त।
गिद्धों के मुखिया ने बुलाई एक आपात् बैठक,
और लिया निर्णय एक चाल लगाने का।
अचानक अगले ही दिन शाम होते-होते नगर में मच चुकी थी,
मार-काट, लोग भूल चुके थे भाई-चारा,
बन चुके थे एक-दूसरे के दुश्मन,
लग गये थे लाशों के ढेर।
गिद्ध गर्म एवं ताजे गोश्त का आनन्द लेकर,
मना रहे थे जश्न अपनी उस चाल के सफल होने का,
जिस के तहत उन्होंने चौराहों पर महापुरुषों की
एवं देवालयों में लगी देवताओं की प्रतिमाओं को किया खण्डित,
अपनी चोंचों की मार से।
और किया इन्तजाम अपनी पीढ़ियों के लिए गर्म और ताजे गोश्त का।
यह कहानी उस नगर की नहीं, हर जगह की है,
यहाँ भी तो बढ़ रही है संख्या गिद्धों के परिवार की,
हो रहे हैं वे हृष्ट-पुष्ट तन्दुरुस्त।
जाने कब लगा देते हैं अपनी चाल,
और काट देते हैं अपनी चोंच से हमारे आपसी बन्धनों को,
उठा देते हैं साम्प्रदायिकता की दीवार,
खोद देते हैं खाइयाँ भाई-भाई के बीच,
कत्ल कर देते हैं मानवता का,
बाँध देते हैं पट्टी हमारी आँखों पर स्वार्थ की।
बना देते हैं जात-पाँत, धर्म-सम्प्रदाय, क्षेत्र,
भाषा, नस्ल को राष्ट्र से ऊपर।

''पानी का अनियन्त्रित प्रवाह बाढ़ बनकर कई गाँवों को डुबा देता है, तो जिह्वा का अनियन्त्रित प्रवाह कई जीवन छिन्न-भिन्न कर देता है।''

मनाते हैं जश्न अपनी चाल के सफल होने पर,
और करते हैं इन्तजाम कुर्सियों का अपने और अपनी पीढ़ियों के लिए।
आप पहचान लें इन्हें,
क्योंकि गिद्धचाल एक प्रवृत्ति है, जो काम आती है अक्सर कुर्सियाँ बचाने या पाने में।

श्री गणेशाय नमः

हमने आईनों को बदलते देखा है।
आदमी देख अक्स बताते देखा है।।
ईद का चाँद वो भला क्या जाने हैं।
भूखे बच्चों ने रोटी में चाँद देखा है।।
कौन कहता है, मिलेगा वो किसी मन्दिर में।
मैंने फुटपाथ पे भगवान जीते देखा है।।
जिनको सौंपी मशालें रौशनी के लिए।
उन्हें ही बस्तियाँ हमने जलाते देखा है।।
आज दिल से गले मिलो यारो।
कल का क्या कल किसने देखा है।।

क्या अपनाया, क्या छोड़ दिया

पिज्जा-बर्गर को अपनाया	-	बाटी-रोटी को छोड़ दिया।
क्लब-पार्टी को अपनाया	-	भाईचारा छोड़ दिया।
डीजे-डिस्को को स्वीकारा	-	जीवन-संगीत को छोड़ दिया।
जींस-टीशर्ट को अपनाया	-	धोती-कुर्त्ता को छोड़ दिया।
तड़क-भड़क को अपनाया	-	ध्यान-साधना छोड़ दिया।
नकली जीवन अपनाया	-	सादा जीवन छोड़ दिया।
पार्टी में जाना स्वीकारा	-	मन्दिर में जाना छोड़ दिया।
मॉम-डेड को स्वीकारा	-	माँ-बाबूजी छोड़ दिया।
हैलो-हाय को अपनाया	-	नमस्कार को छोड़ दिया।
ऐलोपैथिक को अपनाया	-	आयुर्वेद को छोड़ दिया।
बाइक पर जाना स्वीकारा	-	साइकिल पर चलना छोड़ दिया।
बहस को हमने स्वीकारा	-	सत्संगों को छोड़ दिया।
पश्चिमी सभ्यता स्वीकारी	-	पर संस्कारों को छोड़ दिया।

- आशीष दुबे (सचिव साहित्यकार संघ, गंजबासौदा)

साहित्यकार-मंच के सभी सदस्यों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए बहुत-बहुत बधाई! सभी छात्र/छात्राओं से भी आग्रह है कि वे भी अपनी कविताओं के माध्यम से रचना-कौशल को विकसित करें और साहित्कार-मंच से जुडने का प्रयास करें ।

- सम्पादक

''अनवरत् संघर्ष ही सफलता का मूलमन्त्र''

संसार में महान् उपलब्धि हासिल करने वाले व्यक्ति अथक् संघर्षों से ही बनते हैं। इस बारे में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य काफी उत्सुकता पैदा करता है कि सृष्टि की रचना ही शताब्दियों के संघर्ष का परिणाम है। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा आदि सभी आखिरकार जबरदस्त संघर्ष का ही परिणाम हैं। यदि सम्पूर्ण जीवन से संघर्ष और सफलता को अलग कर दिया जाये, तो चाहत , आरजू, तमन्ना, ख्वाहिश, इच्छा आदि स्वतः ही बेमानी हो जायेंगे। अतः, चाहत/ इच्छा की सार्थकता निर्विवाद रूप से संघर्ष में है।

आज का युग प्रतियोगिता का है। ऐसी प्रतियोगिता, जिसमें खुद की सर्वश्रेष्ठ साबित करना पड़ता है। वैसे लाखों की भीड़ में खुद को सर्वश्रेष्ठ साबित करना वाकई कठिन कार्य है। औसत से लेकर सर्वश्रेष्ठ के बीच के फासले को तय करना ही संघर्ष है, किसी हिन्दी कवि ने कहा है-'' वह पथ क्या, यदि पथ पर बिखरे शूल न हों, नाविक की धैर्य-कुशलता क्या, यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों'' अर्थात् संघर्षशील व्यक्ति सदैव सकारात्मक रुख (सोच) अख्तियार किये रहता है। वह हमेशा यही मानता है कि हालात कभी तो बदलेंगे। यही निश्छल चाहत उसे एक दिन उसकी मंजिल तक पहुँचा देती है। वर्तमान युग में संघर्ष तो करना ही पड़ेगा, साथ में भी जरूरी है कि संघर्ष सही दिशा में हो। ''जहाँ चाह, वहाँ राह''। बशर्ते संघर्षरत मनुष्य हार नहीं माने। इसके लिए आवश्यक है कि संघर्षशील व्यक्ति में जीत का जज्बा बरकरार रहे। संस्कृत में कहते हैं- ''प्रयत्नो विधेय प्रयत्नो विधेय अर्थात् प्रयत्न करना चाहिए प्रयत्न करना चाहिए। जिसमें हिम्मत है संघर्ष करने की, उसको हक है, मंजिल पाने का''।

*-**जसवन्त सिंह दाँगी** (सहा. शिक्षक)*

चश्मे-ही-चश्मे

आजकल तो भई चश्मे-ही-चश्मे नजर आ रहे हैं। कोई शौक से चश्मे पहनता है, कोई मजबूरी में। कोई काले चश्मे पहनता है, तो कोई नीले। जिसे देखो, वह अपने रंग का चश्मा लिये घूम रहा है। जो अपनी पसन्द का चश्मा लेता है, वह अपनी पसन्द के अलावा किसी दूसरे रंग को देखना ही नहीं चाहता । कुछ लोगों ने तो चश्मे को आँख की बजाय अपनी सोच पर चढ़ा लिया है यानी वे कहेंगे, वही सही है और वे सोचेंगे, वही मुनासिब है । यह दोष हमारा नहीं है, यह आज के हवा-पानी का दोष है। देखो, आजकल के बच्चे यह तो जानते हैं कि फैशन के इस दौर में आगे कैसे बढ़ना है, लेकिन यह नहीं जानते हैं कि अपने क्षेत्र का नेता कितना भ्रष्ट है और दो साल में उसने कितना माल कमाया है। जब तुम अपने अधिकारों के लिए जागरूक नहीं, तो क्या तुम्हारी आँखों से चश्मा उतारने स्वयं भगवान् आयेंगे?

*-कु. **संगीता शर्मा**,* **कक्षा-12 (गणित)**

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य

शरीर, मन और आत्मा हर स्तर पर स्वस्थ रहने के लिए योग तथा आसनों का विशेष महत्त्व है। इनकी ऐसी कई विधियाँ हैं, जिनका नियमित अभ्यास करके व्यक्ति पूरी तरह स्वस्थ एवं नीरोगी बना रह सकता है।

योग-स्थापना अनुसन्धान-केन्द्र एवं डॉ. गांगुली योग विद्यापीठ-संस्था के योग-शिक्षक पवन गुरु बताते हैं कि सर्दी के मौसम में फिट एवं स्वस्थ रहने के लिए कपालभाति, भस्त्रिका, भ्रामरी प्राणायाम एवं आसनों में सूर्य-नमस्कार भुजंग, पावनसुत आदि विशेष रूप से किये जाने चाहिए, इनके नियमित अभ्यास से इस मौसम में पूरी तरह स्वस्थ रहा जा सकता है। पवन गुरु कहते हैं- परम्परागत दृष्टि से योग शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ जीवन बिताने की कला है।

ब्लड प्रेशर व हृदय रोगी रखें विशेष ध्यानः-

योग-शिक्षक पवन गुरु के अनुसार, ब्लड प्रेशर एवं हृदय रोगियों को सर्दी के सीजन में विशेष ध्यान रखने की जरूरत होती है। उनके अनुसार, ऐसे लोगों को सुबह जल्दी सैर करने से बचना चाहिए। साथ ही नियमित, लहसुन की दो कली, मैथी दाना एक चम्मच नीबू का सेवन करना चाहिये।

उन्होंने बताया कि ऐसे रोगियों को रात्रि के समय हल्का खाना जैसे मूँग की दाल, लौकी की सब्जी, जौ व देसी चना मिक्स रोटी खाना चाहिये। खड़े होकर सामने की ओर झुकने वाले योग व प्राणायाम नहीं करना चाहिये।

योग-प्राणायाम के लाभ एवं महत्त्वः-

प्राण को अपने वश में करने की प्रक्रिया ही प्राणायाम है। योगासन शरीर के रोगों को दूर करता है। हमारे शरीर में मस्तिष्क, हृदय तथा फेंफड़ों का बड़ा महत्त्व है। योग तथा प्राणायाम शरीर में नयी जान डाल देते हैं। इनमे फेंफड़ें मजबूत होते हैं। योग तथा प्राणायाम हमारे शरीर में भरी हुई गन्दी वायु तथा कार्बन गैस को बाहर निकाल शरीर को स्वच्छ बनाते हैं। योग तथा प्राणायाम शरीर में रक्त-संचार की वृद्धि कर शरीर को रोगों से लड़ने के अनुरूप बनाते हैं। नियमित योग और प्राणायाम उसे आरोग्य रखते हैं। लम्बी और गहरी श्वास शरीर के हर भाग में पहुँचकर ऊर्जा देती है।

इन बातों व नियमों का रखें ध्यानः-

- प्राणायाम व योग साफ, शुद्ध और शान्त स्थान पर करना चाहिए। यदि पार्क में जल के किनारे किया जाये, तो बहुत अच्छा है।
- श्वास केवल नाक से ही लें, ताकि साफ और स्वच्छ वायु आपके शरीर में जाये। लम्बी-लम्बी श्वास लेने का अभ्यास करें।
- सही स्थिति में बैठें, अपना मन शान्त रखें।
- भोजन करने के कम-से-कम तीन घण्टे बाद ही योग व प्राणायाम करें।
- आठ साल से कम उम्र के बच्चे योग व प्राणायाम न करें।
- यदि आप किसी बीमारी, व्याधि से ग्रस्त हैं, तो योग-शिक्षकों से सलाह लेने के बाद ही योग-प्राणायाम करें। सामान्य स्थिति में भी योग शिक्षक की सलाह लेकर ही योग व प्राणायाम करना चाहिये।
- प्राणायाम व योग करते समय शरीर को तनाव में न लायें, शान्त अवस्था में सीधे बैठें, तो ज्यादा लाभ मिलेगा।
- यदि योग व प्राणायाम करते समय थकान का अनुभव हो, तो लम्बी-लम्बी श्वास लें और कुछ देर आराम करें।
- योग व प्राणायाम का समय धीरे-धीरे बढ़ायें। शुरू में 10 मिनिट अभ्यास करें, फिर धीरे-धीरे बढ़ाते हुए 30-45 मिनट तक करें।

- सम्पादक

Tobacco & its affects

Tobacco products are products made entirely or partly of leaf tobacco as raw material, which are intended to be smoked, sucked, chewed or snuffed, All contain the highly addictive psychoactive ingredient, nicotine.

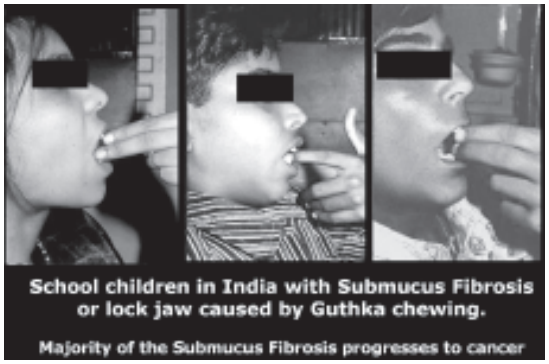

Tobacco use is one of the main risk factors for a number of chronic diseases, including cancer, lung diseases etc, Despite this, it is common throughout the world.

There are some 4000 known chemicals in tobacco smoke; at least 250 of them are known to be harmful and more than 50 are known to cause cancer in humans. Tobacco smoke in enclosed spaces is breathed in by everyone, exposing smokers and non-smokers alike to its harmful effects. Neither ventilation nor filtration, even in combination, can reduce tobacco smoke exposure indoors to levels that are considered acceptable. Only 100% smoke-free environment provide effective protection. Contrary to common belief, smoke free environments are widely supported by both smokers and non-smokers

WORLD NO TOBACCO DAY- 31ST MAY.

On 31st may each year WHO celebrates world No

Tobacco Day highlighting the health risks associated with tobacco use and advocating for effective policies to reduce consumption. Tobacco use is the second cause of death globally (after hypertension) and is currently responsible for killing one in 10 adults worldwide.

The Theme for World No Tobacco Day 2010 was gender & tobacco, with an emphasis on marketing to woman WHO used the day to draw particular attention to the harmful effects of tobacco marketing and smoke on women and girls.

Youth & Tobacco

The vast majority of smokers begin using tobacco products well before the age of 18 years. It was predicted that if the pattern seen now a days continued, a lifetime of tobacco use would result in the deaths of 250 million children and young people alive today, most of them in developing countries.

Health affects of smoking among young people

- Among young people, the short-term health consequences of smoking include respiratory and non respiratory affects, addiction to nicotine.
- In adults, cigarette smoking causes heart diseases and stroke.
- Smoking hurts young people's physical fitness in terms of both performance and endurance on average, someone who smokes a pack or more of cigarettes each day lives 7 years less than someone who never smoked.
- The resting heart rates of young adult smokers are two to three beats per minute faster than nonsmokers.
- Smoking at an early age increases the risk of lung cancers.
- Teenage smokers suffer from shortness of breath almost three times as often as teens who don't smoke.
- Teenage smokers have more chances of having emotional or psychological complaint.
- Smoking is associated with a host of other risky behaviors such as fighting etc.

Other Effects

Tobacco users who die prematurely deprive their families of income, raise the cost of health care and hinder economic development. In some countries, children from poor households are frequently employed in tobacco farming to provide family income. These children are especially vulnerable to "green tobacco sickness", which is caused by the nicotine that is asserted through the skin from the handling of wet tobacco leaves.

Second hand smoke (Passive smoking)

Second hand smoke is the smoke that fills restaurants, office or other enclosed spaces when people burn tobacco products such as cigarettes, bidis & water pipes. There is no safe level of second-hand tobacco smoke.

Facts of Passive Smoking

- Only 5.4% of people are protected by comprehended national smoke-free laws.
- Of the 100 most populous' cities, 22 are smoke free.
- Almost half of children regularly breathe air polluted by tobacco smoke.
- Over 40% of children have at least one smoking parent.
- Second-hand smoke causes 600000 premature deaths per year.
- In 2004, Children accounted for 28% of the deaths attributable to second-hand smoke.
- In adults, second hand smoke causes serious cardiovascular and respiratory diseases, including coronary heart disease and lung cancer. In infants it causes sudden death. In pregnant woman, it causes low birth weight.
- Youths exposed to second-hand smoke at home are 1½ to 2 times more likely to start smoking than those not exposed.
- Tobacco use imposes both direct economic costs on society, such as those associated with treating tobacco-related diseases and indirect costs, such as those associated with reduced productivity or lost wages because of death or illness.

Tobacco Free Initiatives:

Tragically, the epidemic is shifting towards the developing world, where 80% of tobacco-related deaths will occur within a few decades. The shift is caused by a global tobacco industry marketing strategy that targets young people and adults in developing countries, the tobacco epidemic is man-made and entirely preventable. Yet only 5% of the world's population lives in a country that fully protects its population.

In 2008, WHO introduced the MPOWER package of tobacco control measures to counter the epidemic and to help countries to implement the WHO framework convention.

The Six MPOWER measures are:

- Monitor tobacco use and prevention policies.
- Protect People from tobacco use.
- Offer help to quit tobacco use.
- Warn about the dangers of tobacco.
- Enforce bans on tobacco advertising. Promotion and sponsorship.
- Raise taxes on tobacco.

- Dr. Sudhir Agrawal, Child Specialist.

राष्ट्रीय सेवा योजना

रासेयो इकाई की वार्षिक गतिविधियों की सामान्य जानकारी

सत्र-2010-11 रासेयो कार्यक्रम की गतिविधियों में विभिन्न प्रकार के आयोजन स्वयंसेवकों द्वारा किये गये, जिसमें रासेयो की ''सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तिगत साफ-सफाई'' पर आधारित कार्यक्रमों की प्रमुखता रही। सत्र 2010-11 के लिए 100 छात्र/छात्राओं का पंजीयन कर छात्र-उन्मुखीकरण का कार्यक्रम माह जुलाई में आयोजित किया गया। छात्र-उन्मुखीकरण कार्यक्रम में छात्र/छात्राओं ने भाषण, भजन, देशभक्ति-गीत, रासेयो के गीतों का भी गायन किया।

माह अगस्त में स्वयं-सेवकों द्वारा ''शिक्षा का अधिकार अधिनियम'' थीम पर आधारित ''स्कूल चलें हम '' नाटक का मंचन किया गया, जिसे स्वतन्त्रता-दिवस कार्यक्रम में उत्कृष्ट विद्यालय में स्वयं-सेवकों ने प्रदर्शित किया तथा आईसेक्ट (इग्नू) कम्प्यूटर की ओर से विशेष पुरस्कार भी प्रदान किया गया। माह अगस्त में स्वयं-सेवकों द्वारा विद्यालय-परिसर व विद्यालय में स्थित पौधों की सुरक्षा का सफलतापूर्वक अभियान चलाया। साथ ही, स्वयं-सेवकों द्वारा विद्यालय-परिसर में श्रमदान भी किया गया।

माह सितम्बर में स्वयंसेवकों द्वारा रक्तदान के दौरान विभिन्न प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया। विद्यालय में हिन्दी-दिवस, विश्व साक्षरता-दिवस, रासेयो-दिवस, गाँधी-जयन्ती के शुभ-अवसर पर इकाई द्वारा निबन्ध, भाषण, गीत, रंगोली, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं में स्वयंसेवकों ने उत्कृष्ट स्थान अर्जित किया ।

माह अक्टूबर में स्वयंसेवकों द्वारा विश्व हाथ-धुलाई-दिवस पर प्राथमिक विभाग के समस्त छात्र/छात्राओं को अपने व्याख्यान द्वारा तथा सीधे कक्षाओं में जाकर साफ-सफाई एवं हाथ धुलाने का अभ्यास भी कराया गया।

उल्लेखनीय कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी इकाई का विशेष शिविर दिनांक 23.12.10 से 29.12.10 तक ग्राम फतेहपुर, तहसील गंज बासौदा में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें 40 छात्र व 10 छात्राएँ शामिल होने जा रहे हैं।

शिविर के दौरान गाँव में पोलियो-उन्मूलन जागरूकता-रैली में स्वयंसेवकों की सक्रिय भागीदारी, बालिका-शिक्षा से सम्बन्धित आयोजन, गाँव के प्रमुख मार्गों की सफाई एवं मरम्मत, साक्षरता, स्वास्थ्य, आर्थिक-सामाजिक सर्वेक्षण, स्वास्थ्य-परीक्षण, पर्यावरण, कृषि तथा जल स्रोतों का संरक्षण समीपस्थ ग्रामों में साक्षरता व स्वच्छता से सम्बन्धित कला-प्रशिक्षण-शिविर एवं अन्य सभी गतिविधियाँ शिविर के दौरान सम्पन्न की जायेंगी।

-हरिओमशरण शर्मा (कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो)

पानी

अमृत के नये रूप में, साकार है पानी,
सच है कि सकल विश्व का, आधार है पानी।
जीवन,जगत, निसर्ग का, रस-तत्त्व यही है,
पृथ्वी का यही प्राण है, रसाधार है पानी।
अनमोल बड़ी चीज, जो बेमोल मिली है,
इंसान को भगवान् का, उपहार है पानी।
ये फूल, हरे खेत, ये पत्तों का हरापन,
धरती की हरी चुनरी, का श्रृंगार है पानी।
पानी न बचा पाये, तो हम भी न बचेंगे,
जीवन ही कहा जाने का, हकदार है पानी।
दुर्भाग्य की पहचान ही, पायें न हम उसे,
साक्षात् वरुण देव का, अवतार है पानी।
जल-देवता! इंसान के अपराध की माफी,
तुझको तो नमस्कार, नमस्कार है पानी।

-दीपक सेन,
कक्षा- 10

स्काउट

स्काउट में भी चले नवांकुर आगे-आगे

स्काउट से छात्रों का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होने के साथ-साथ उनमें स्वावलम्बन एवं देशभक्ति की भावना

का विकास भी होता है। इन्हीं सब बातों को विकास कराने के लिए विद्यालय में स्काउट / गाइड की शुरूआत 2004-05 में की गयी थी। स्काउट/गाइड दल का नाम शिवाजी दल है, जिसमें 32 स्काउट छात्र दर्ज हैं। विद्यालय के पहले स्काउट/गाइड शिक्षक श्री नारायण सिंह राजपूत थे, उनके बाद श्री रामबाबू रघुवंशी रहे, जिनके समय में स्काउट के छात्रों ने प्रशंसनीय उपलब्धियों को हासिल किया, जिनमें स्काउट राष्ट्रपति-पुरस्कार विद्यालय के 4 छात्रों को एवं स्काउट राज्य-पुरस्कार 6 छात्रों को मिला। अभी तक विद्यालय में संचालित स्काउट-दल के छात्रों ने सभी प्रकार के प्रशिक्षण-शिविरों में विद्यालय-व्यय पर टोली नायक, द्वितीय सोपान, तृतीय सोपान, जम्बूरी, राज्यपाल एवं राष्ट्रपति-प्रशिक्षण-शिविर में भाग लिया, जिसका परिणाम यह रहा कि विगत वर्ष स्काउट-छात्र मनीष दुबे आत्मज श्री कृष्ण कुमार दुबे, अक्षय दीक्षित आत्मज श्री अवधेश दीक्षित ,राघवेन्द्र दाँगी आत्मज श्री मनोहर सिंह दाँगी, हर्षद भारद्वाज आत्मज श्री नन्दगोपाल भारद्वाज को राष्ट्रपति-पुरस्कार महामहिम प्रतिभा देवी पाटिल से नयी दिल्ली में प्राप्त किया। इसी तरह तरुण लाहौरी आत्मज श्री केशव लाहौरी, रविन्द्र दाँगी आत्मज श्री मदन सिंह दाँगी, निखिल रघुवंशी आत्मज श्री नारायण सिंह रघुवंशी, अमृतांश कटियार आत्मज श्री बैजनाथ कटियार, नीलेश रघुवंशी आत्मज श्री कमलसिंह रघुवंशी, शैलेन्द्र कुशवाह आत्मज श्री गोविन्दसिंह कुशवाह को स्काउट राज्यपाल-पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्तमान में भी विद्यालय के 6 स्काउट छात्र राष्ट्रपति -प्रशिक्षण ले रहे हैं। ये सभी उपलब्धियाँ किसी अशासकीय विद्यालय में सर्वाधिक हैं, इनमें विशेष योगदान श्री वी.एस. भदौरिया एल.टी.(एस) का है, जिनके मार्गदर्शन में वर्तमान में स्काउट दल का संचालन मैं कर रहा हूँ।

-**रामबाबू पांचाल**, (स्काउट शिक्षक)

Entry to Enter

जा रहा था physics की class में, Angle deviation के कारण पहुँच गया Chemistry की class में, चल रहा था वहाँ पर Hybridisation, जो दिमाग में कर गया Confusion. छोड कर चला आया Maths की Class में, जहाँ चल रहा था Differential equation, वहाँ अजब-गजब देखकर Calculation और भी हो गया मुझे Tension. मरता क्या न करता, चला आया सीधे घर और आते ही गया अपने Bed पर पसर। x-axis पर मेरा Bed था, y-axis में लटका था पंखा, बदन भी दर्द से टूट रहा था, नींद आने में लगा पूरा 1 घण्टा, सपने में आये God, जगाकर कहा उठ जा fraud, मैंनें पूछा Respectfully, क्यों परेशान कर रहे हैं Unnecessarily, उन्होंने मुझसे कहा- जगाने के पीछे है एक Reason, आया हूँ मैं यहाँ लेकर बहुत बड़ा Mission और पूछा क्यों होती है तुम्हें Frustration? तैयारी तुम करो जमकर, March में है तुम्हारा Examination, करना है तुम्हें Encourage, यही है मेरे mission की First stage। सुबह जब मैं उठा था, सब कुछ था बिल्कुल Normal, एक दोस्त ने बजायी Door bell. बाहर से ही बोला School पढ़ने चल, अब नहीं होता है मुझे Tension, Now I fell very relaxation, Because I have to pass My Examination.

-Rajat Simele, Class- 12th (Maths)

The value of time

Time is very precious. We should not waste time. Time once lost is lost Forever. If you waste your time, Time will waste you.

Money spent can be earned again. It is not so with time. Time once spent is spent and gone. It can never be got back. Almost everything in the world can be purchased, but time lost cannot be purchased.

As each second ticks away, that second moves from the present to the past. If you have not properly used that single second when it was in the present it is a second wasted and it is already lost and became the past. No amout of crying or trying can bring you back the past.

If you want success in life, make proper use of time. Mind the present and make full use of it.

- Saurabh Solanki,
Class- 11th (Maths)

पुस्तकालय से

आज का युग इलेक्ट्रॉनिक युग है। इस युग में विद्यालय-पुस्तकालय का महत्त्व और भी बढ़ गया है। पुस्तकालय विद्यालय का हृदय और शिक्षा तथा ज्ञान के प्रचार का मूल आधार माना जाता है। यह नवीन अवधारणा आधुनिक युग की देन है। आधुनिक पुस्तकालय में काफी बदलाव आया है। सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में नवांकुर-पुस्तकालय में परिवर्तन आया है। नवांकुर उ.मा. विद्यालय के पुस्तकालय के उद्देश्य को पूरा करने में हमारे प्राचार्य महोदय व विद्यालय की टीम हमेशा सक्रिय रहती है। पुस्तकालय का उद्देश्य विद्याथियों को ग्रन्थों के प्रति अभिरुचि जाग्रत करना एवं उनसे स्नेह करना सीखना। पुस्तकालय के माध्यम से ग्रन्थों का आदर करना तथा उनका अध्ययन में प्रयोग करना सीखना, प्रारम्भिक शिक्षा देना, जिसमें व्यवहार एवं आचार तथा ग्रन्थों का उपयोग करना सीखना, नवीन एवं भिन्न प्रकार के साहित्य से परिचित कराना। नये-नये सन्दर्भ से परिचित कराना एवं नवीनतम जानकारी प्राप्त कराना। ज्ञान के क्षेत्र मे स्वावलम्बी होने के लिए स्वाध्याय पर जोर देना। शिक्षकों को अध्ययन-अध्यापन में सहयोग प्रदान करना। विद्याथियों की बुद्धि की सूक्ष्म दृष्टि को व्यापक और स्मृति को विकसित करना। व्यक्तिगत सेवा द्वारा कक्षा- शिक्षा को व्यापक और तुलनात्मक रूप देना। विविध प्रकार के विद्याथियों को सामान्य ज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देना। समय-समय पर रोजगार-सम्बन्धी , कैरियर सम्बन्धी जानकारी देना है। के-यान के माध्यम से पाठ्य-सामग्री का लाभ देना।

हमारे विद्यालय के प्राचार्य महोदय हमेशा पुस्तकालय-टीम को मार्गदर्शन देते रहते हैं। पुस्तकालय व विद्यालय-टीम के मार्गदर्शन द्वारा नवांकुर के विद्यार्थी हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन कर, न केवल विद्यालय का, बल्कि नगर व प्रदेश का नाम रौशन कर रहे हैं। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, खेलों का क्षेत्र हो, साहित्य-विद्याएँ हों अथवा विज्ञान का क्षेत्र हो। नवांकुर के होनहार विद्यार्थी अपने आयाम को विस्तार दे रहे हैं। ये वे ही विद्यार्थी हैं, जो नियमित रूप से पुस्तकालय व वाचनालय में आकर नवीनतम जानकारी प्राप्त करते हैं।

विद्यार्थी के उल्लेखनीय प्रदर्शन को क्रमशः के पृष्ठों पर समेटना कठिन है, परन्तु प्रमुख छात्र-छात्राओं के नाम व विधाएँ, जिनमें अपना परचम लहराया है, वे इस प्रकार है-

	नाम			विधाएँ
1.	कु. अंकिता टण्डन	(गणित)	-	विज्ञान-मन्थन-यात्रा (जापान-यात्रा), जिला-प्रवीण्य-सूची (तृतीय)
2.	सरस सुहाने	(गणित)	-	जिला-प्रवीण्य-सूची (द्वितीय)
3.	कु. कीर्ति रघुवंशी	(गणित)	-	वाद-विवाद, अखिल भारतीय निबन्ध-प्रतियोगिता(द्वितीय)
4	मनीष दुबे	(गणित)	-	दूरदर्शन-क्विज में भागीदारी, शतरंज-प्रतियोगिता, बाल-विज्ञान प्रोजेक्ट(राष्ट्रीय)
5	कु. समीक्षा जैन	(गणित)	-	शतरंज-प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, म.प्र. प्रावीण्य सूची (10वाँ स्थान)
6	कु. रानी साहू	(गणित)	-	शतरंज-प्रतियोगिता (राष्ट्रीय स्तर)
7	पारस जैन	(गणित)	-	स्वरचित कविता (राज्य-स्तर-प्रथम)
8	कु. विशाखा शर्मा	(गणित)	-	योग, वाद-विवाद प्रतियोगिता(राज्य-स्तर-प्रथम)
9	कु. शिखा शर्मा	(गणित)	-	योग, वाद-विवाद प्रतियोगिता(राज्य-स्तर-प्रथम)
10	रामनारायण दाँगी	(गणित)	-	योग (राज्य-स्तरीय-द्वितीय)
11.	चरणसिंह दादौरिया	(गणित)	-	मोगली (राज्य-स्तरीय- चयन)
12.	कु. पूजा जैन	(गणित)	-	शतरंज-प्रतियोगिता (राष्ट्रीय)
13.	कु. मंजरी नामदेव	(जीव विज्ञान)	-	वाद-विवाद-प्रतियोगिता
14.	कु. अपर्णा औरंगाबादकर	(गणित)	-	वायलिन (राज्य-स्तर -द्वितीय)
15.	नीरज दाँगी	(गणित)	-	शतरंज(राज्य-स्तर)
16.	कु. रुचि राय	(गणित)	-	शतरंज (राज्य -स्तर)
17.	कु. नेहा दाँगी	(गणित)	-	बाल-विज्ञान कांग्रेस प्रोजेक्ट (राज्य-स्तर)
18.	विवेक दाँगी	(गणित)	-	बाल-विज्ञान कांग्रेस प्रोजेक्ट (सम्भाग-स्तर)
19.	मयंक दुबे	(10 वीं)	-	बाल-विज्ञान कांग्रेस (प्रोजेक्ट-राज्य स्तर)
20.	अभिषेक पटेल	(10 वीं)	-	बाल-विज्ञान कांग्रेस (प्रोजेक्ट-राज्य स्तर)

क्रमशः के वार्षिकांक के प्रकाशन के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को बधाइयाँ व शुभकामनाएँ!

-कु. अफसाना शेख *(पुस्तकालय-प्रभारी)*

''पप्पा पाप न कीजिये, न्यारे रहिये आप। जो करसि सो भोगसि, क्या बेटा क्या बाप॥''

खेल

खेल क्षेत्र में नवांकुर फिर आगे

चले नवांकुर आगे - आगे, जी हाँ उक्त बात को ध्यान रखते हुए विद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राज्य स्तर तक अपना परचम लहरा रहे हैं। इस वर्ष योग में जहाँ 19 बच्चों ने राज्य का प्रतिनिधित्व किया तो वहीं शतरंज में 5 बच्चों ने एवं खो-खो में दो एवं थ्रोबॉल में एक विद्यार्थी ने राज्य स्तर पर दस्तक दी है। इस प्रकार प्रतिवर्ष राज्य स्तर पर परचम लहराने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जा रहा है। क्रीड़ा की प्रत्येक विधा में नवांकुर ने अपना लोहा मनवाया है। गौरतलब है की हाल में ही विद्यालय में शीतकालीन क्रीड़ा प्रतियोगितायें आयोजित की जा रही हैं तथा योग कक्षाओं का निरन्तर अभ्यास प्रात:कालीन योग कक्षाओं में किया जाता है। मेरी विद्यार्थियों से अपील है कि और आगे बढ़ें, क्योंकि सफलता का मार्ग अभी खत्म नहीं हुआ है। हमें उस मार्ग तक जाना है जिसके आगे कोई राह शेष नहीं बचती। हम दूसरों के बनाये पदचिह्नों पर न चलकर अपने पदचिह्न स्वयं बनायें क्योंकि

चन्द खिलौनों से अगर बहल गया इंसान, चाँद-सितारे उसे फिर क्या देगा भगवान्।

आईये वर्ष 2010 की खेल उपलब्धियों पर एक नजर डालते हैं-

राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में भागीदारी करने वाले छात्र/छात्राओं की सूची वर्ष 2010-11

क्र.	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	माता का नाम	कक्षा	खेल का नाम
1	अक्षत श्रीवास्तव	श्री कौशल श्रीवास्त	श्रीमती मंजू श्रीवास्तव	4	योग
2	साहिल राजपूत	श्री किशोर सिंह राजपूत	श्रीमती सविता राजपूत	7	योग
3	यश राजपूत	श्री किशोर सिंह राजपूत	श्रीमती सविता राजपूत	5	योग
4	रवि कुशवाह	श्री शिवराज सिंह कुशवाह	श्रीमती अनिता साहू	9	योग
5	दीपेश साहू	श्री घनश्याम साहू	श्रीमती तारा साहू	9	योग
6	गौरव साहू	श्री घनश्याम साहू	श्रीमती तारा साहू	10	योग
7	रामनारायण दाँगी	स्व.श्रीकलेक्टरसिंह दाँगी	श्रीमती राममणी दाँगी	12	योग
8	शैलेन्द्र कुशवाह	श्री गोविन्दसिंह कुशवाह	श्रीमती रामवती कुशवाह	11	योग
9	कृष्णकान्त कुशवाह	श्री धानसिंह कुशवाह	श्रीमती जमनावाई कुशवाह	11	योग
10	भगवतसिंह पाल	श्री विशुनलाल पाल	श्रीमती मन्नूबाई	12	योग
11	रवि सेन	श्री खुमानसिंह सेन	श्रीमती सुधा सेन	11	योग
12	कु. दीक्षा राजपूत	श्री पी.एस. राजपूत	श्रीमती सुमन राजपूत	6	योग
13	कु. पलक गुप्ता	श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता	श्रीमती विभा गुप्ता	8	योग
14	कु. प्रियांशी गुप्ता	श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता	श्रीमती विभा गुप्ता	6	योग
15	कु. योगिता पाली	श्री राजेन्द्र पाली	श्रीमती मीना पाली	7	योग
16	कु. रंजना पाल	श्री विशुनलाल पाल	श्रीमती मन्नूबाई पाल	10	योग
17	कु. प्रीति दाँगी	स्व.श्रीकलेक्टरसिंह दाँगी	श्रीमती राममणी दाँगी	10	योग
18	कु. शिंजा मिश्रा	श्री सन्तोष मिश्रा	श्रीमती माधुरी मिश्रा	12	योग
19	कु. सुनन्दा दांगी	श्री गोविन्द सिंह दाँगी	श्रीमती रुकमणी दाँगी	12	योग
20	कु. साक्षी जैन	श्री संजय कुमार जैन	श्रीमती रेखा जैन	12	शतरंज
21	कु.संगम रघुवंशी	श्री महेन्द्रसिंह रघुवंशी	श्रीमती सुनीता रघुवंशी	11	शतरंज
22	कु. प्रियंका रघुवंशी	श्री रामकृष्ण रघुवंशी	श्रीमती अनीता रघुवंशी	11	शतरंज
23	कु.रुचि राय	श्री सन्तोष राय	श्रीमती सीमा राय	11	शतरंज
24	विशाल रघुवंशी	श्री मोहनसिंह रघुवंशी	श्रीमती रामकली रघुवंशी	9	शतरंज
25	धर्मेन्द्र रघुवंशी	श्री जीवनसिह रघुवंशी	श्रीमती रेखाबाई रघुवंशी	11	खो-खो
26	विशाल रघुवंशी	श्री मोहनसिंह रघुवंशी	श्रीमती रामकली रघुवंशी	9	खो-खो
27	अनुपम वितारी	श्री महेन्द्र तिवारी	श्रीमती रामदुलारी तिवारी	12	थ्रो-बॉल

सत्र 2010 में राज्य स्तर पर चयनित प्रतिभागी

खेल का नाम	ब्लॉक	जिला	संभाग	राज्य
योगा	30	23	23	19
शतरंज	30	13	13	01
थ्रो–बॉल	36	36	13	01
बैडमिण्टन	15	07	07	-
खो–खो	24	15	03	02
कबड्डी	12	12	01	-
एथलेटिक्स	15	07	02	-
कुल	**162**	**113**	**62**	**27**

– ***कपिल गौड़*** *(खेल प्रभारी)*

योग–शिक्षक

नन्हे–से फूल हम हैं,
माली हमारे शिक्षक।
हमको जरा खिला दे,
ऐसे हैं प्यारे शिक्षक।
नन्हे–से फूल हम हैं,
माली हमारे शिक्षक।
मौला तेरी नजर में,
बच्चे सभी बराबर।
हमको गुणी बना दें,
ऐसे हमारे शिक्षक।
नन्हे–से फूल हम हैं,
माली हमारे शिक्षक।
हम यूँ भटक न पायें,
अपनी डगर–डगर से।
मंजिल मेरी दिखा दें,
ऐसे हैं प्यारे शिक्षक।
नन्हे–से फूल हम हैं,
माली हमारे शिक्षक।
हम सब में है बुराई,
गलती भी है सभी में।
हमको राह दिखा दें,
ऐसे हैं प्यारे शिक्षक।

–नीलेश जैन (सहा.शिक्षक)

विज्ञान–मन्थन – मेरा अनुभव

मैं आशीष शर्मा, आपके साथ अपने विज्ञान मन्थन –यात्रा के अनुभव को बाँट रहा हूँ। सबसे पहले मैं अपने विद्यालय के समस्त शिक्षकगण व प्राचार्य के प्रयासों का दिल से सम्मान करता हूँ। शायद इनके प्रयासों के बिना यह कभी सम्भव नहीं हो पाता।

विज्ञान–मन्थन की यात्रा विद्यार्थियों को विज्ञान की ओर अग्रसर करने हेतु सरकार एक योजना है, जिसमें प्रवेश के उत्कृष्ट विद्यार्थियों का चयन किया जाता है।

पूरे प्रदेश में एक नवांकुर ही वह विद्यालय है, जहाँ से एक साथ इतने बच्चे चयनित हुए। केवल 12वीं कक्षा से ही 6 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इसका सीधा अर्थ है कि नवांकुर विकास की ओर अग्रसर है व इन अग्रसर विद्यार्थियों को ही प्रोत्साहित करने की योजना का नाम है विज्ञान–मन्थन।

यात्रा के प्रारम्भ में हमें भोपाल के आँचलिक विज्ञान–केन्द्र, जल–तरण तथा बड़े तालाब को प्रदूषण से बचाने हेतु चल रहे प्रयासों को जाना। फिर हमने दक्षिण भारत की ओर कदम बढ़ाये , जहाँ की हरियाली व पानी मन को प्रसन्न करने वाले हैं। चैन्नै में हमने वहाँ के रहन–सहन को देखा तथा लुंगी पहनने के प्रचलन का कारण जाना व समझा भी। चैन्नै में हमारी यात्रा (एल.आर.आई.) का भ्रमण किया। उसके बाद हमने देखा तथा कॉलेज के बड़े–बड़े प्रोफेसरों से मुलाकात भी की। इन प्रोफेसरों से मिलकर हमने बहुत कुछ सीखा तथा भविष्य से सम्बन्धित सारी शंकाएँ दूर कीं। उसके बाद हमने भ्रमण किया, एशिया के सबसे बड़े मरीन बीच का, जिसका किनारा करीब 10 किमी. लम्बा तथा ठण्डी हवाएँ भावविभोर करती हैं। समन्दर का पानी आपको अपनी ओर खींचता है। एक घण्टे तक प्राकृतिक सौन्दर्य का मजा लिया। अगले दिन हमने मछली–पालन व झींगा–पालन में अग्रसर भारत को देखा। उसके बाद हमने चैन्नै का आँचलिक विज्ञान–केन्द्र देखा, जहाँ हमने 3डी दृश्यों का मजा लिया और ब्रह्माण्ड के आदि व अन्त की कहानी जानी। दुर्भाग्यवश कोयम्बटूर यात्रा रद्द हो गयी, पर इन कुछ दिनों में ही हमने बहुत कुछ सीखा व बहुत कुछ सीखने का प्रयास किया। मैंने परिस्थिति के हिसाब से रहना, दूसरे रीति–रिवाज में ढलना व उनका सम्मान करना सीखा। इस यात्रा में सभी की छिपी हुई प्रतिभाएँ सामने आयीं। कोई अच्छा गाता है, तो कोई अच्छा नाचता है, तो किसी का सामान्य ज्ञान अच्छा है। इस प्रकार चैन्ने–2010 की यात्रा का अनुभव हम छोटे–से से शहर गंज बासौदा के विद्यार्थियों ने लिया–

कुछ पंक्तियाँ के साथ मैं अन्त करूँगा–
नमस्ते बना वणक्कम तो थैंक्यू बना नान्ट्री,
दाल–रोटी का नाम नहीं, मीठे पानी की है कमी।
खाना हो तो चावल खाओ , पहनना हो तो लुंगी,
ऐसा है हमारे देश भारत का महानगर चैन्नई।।

– ***आशीष शर्मा,*** कक्षा 12 गणित

शिक्षक की कलम

प्रेम में समर्पण

तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली से बहुत प्रेम करते थे। वे हमेशा उसके आगे-पीछे घूमते रहते थे। रत्नावली उन्हें इस बात के लिए टोकती थी, ताकि तुलसीदास की प्रतिभा बेकार न हो।

एक बार रत्नावली अपने मायके गयी। घर पर तुलसीदास बैचेन हो उठे और अन्धेरे में ससुराल के लिए निकल पड़े। भारी बारिश के कारण रास्ते में पड़ने वाली नदी को भी जैसे-तैसे पार किया। ससुराल में रत्नावली के घर में वे किसी को जगाना नहीं चाहते थे। उन्होंने पहली मंजिल पर स्थित रत्नावली के कमरे की खिड़की पर लटकी एक रस्सी देखी। वे रस्सी के सहारे ऊपर पहुँच गये। आवाज सुनकर रत्नावली जाग गयी और तुलसीदास को देखकर हैरान रह गयी। रत्नावली ने खिड़की से बाहर झाँका, तो वहाँ रस्सी नहीं, साँप था, जिसे पकड़कर तुलसीदास ऊपर आये थे।

रत्नावली ने घबराकर पूछा, यह सब क्या है? तुलसीदास बोले, तुम्हारे लिए मेरा प्रेम। इस बात पर रत्नावली ने क्रोध में आकर उन्हें फटकार लगायी और बोली, आपको जितना प्रेम मुझसे है, उसका आधा भी अगर प्रभु श्रीराम से होता, तो आप इस संसार-सागर से मुक्ति पा लेते।

पत्नी की फटकार ने तुलसीदास की आँखें खोल दीं। वे बिना बोले बहाँ निकल गये और खुद को प्रभु राम की भक्ति में डुबो दिया और ***रामचरित मानस*** जैसे विश्व-विख्यात ग्रन्थ की रचना की।

संकलनकर्त्ता- ***पी.एन.सेन***, प्रधानाचार्य, प्राथमिक विभाग

पेरिस हिल्टन का पोस्टर है, भारत माता का नहीं।

अभी हाल ही की बात है, मैं नव दुर्गा पर्व के उपलक्ष्य में लगायी गयी माँ दुर्गा की विभिन्न झाँकियों को देखने अपने मित्रों के साथ अपने ही नगर गंज बासौदा में घूम रहा था। थाने के सामने और भी कई फुटपाथों पर फैले हुए पोस्टर-विक्रताओं को देखकर मेरे मन में विचार आया, क्यों न अपने विद्यालय के कार्यालय में लगाने के लिए भारत माता का बड़ा-सा पोस्टर ले लिया जाये, लेकिन बड़ा आश्चर्य हुआ मुझे और मुससे ज्यादा पोस्टर-विक्रेताओं को, वे लगभग मुझ पर हँसते हुए कह रहे थे, 'भाई सा. क्या ढूँढ रहे हो? भारत माता का पोस्टर! अरे, भाई सा., आप तो ब्रिटनी स्पीयर्स के पोस्टर लगाओ। अच्छे-खासे जवान आदमी हो, पेरिस हिल्टन का पोस्टर ले जाओ, बिलकुल नया आया है, वो भी.....ड्रेस में। मैं चुपचाप चला आया। उस भारत माता की सन्तान को, भारत माता की महिमा सुनाने का सामर्थ्य तो उसके वचन सुनकर पहले ही खत्म हो चुका था। यही है भारत, नहीं।

– ***सै. शफाकत हुसैन कादरी,*** योग गुरु (पूर्व छात्र नवांकुर)

विद्या-विद्यार्थी और विद्यालय

विद्या शब्द मानव के बौद्धिक स्रोतों को संचालित करता है और मानव के अन्दर के अन्धकार को दूर करता है। विद्या, विद्यार्थी और विद्यालय तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं और तीनों का एक-दूसरे के बिना कोई अस्तित्व नहीं होता । विद्यार्थी विद्या को प्राप्त करने के लिए विद्या के मन्दिर में प्रवेश करते हैं और यहीं से उनका भाग्य बनना शुरू हो जाता है। विद्यालय में बच्चों का चहुँमुखी विकास किया जाता है। इसी आशा से बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों को एक अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाते हैं।

ये छोटे-छोटे बच्चे, जो एक समय अपने गुरुजनों का आदर करते हैं, उनसे डरते हैं, उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। धीरे-धीरे बड़े होते-होते ये बातें बदल कैसे जाती हैं? जिन गुरुओं ने उन्हें हाथ पकड़कर लिखना सिखाया, अपने बड़ों का आदर-सम्मान करना सिखाया, अचानक बड़ी कक्षा में आकर ये उन्हें ही अभिवादन करना भूल कैसे जाते हैं। मेरे कहने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि सब विद्यार्थी एक जैसे होते हैं, लेकिन यदि कुछ का व्यवहार ही इस तरह का होता है, तो क्यों? इसी क्यों का हमें जवाब ढूँढना चाहिये कि जो ये गलतियाँ कर रहे हैं, उनके साथ चूक आखिर हुई कहाँ? क्या शिक्षकों की गलती थी या उनके आसपास का माहौल ही ऐसा था।

यदि विद्यार्थी कभी-कभी कोई शरारत करते हैं, तो वे सहन की जा सकती हैं लेकिन यदि ये ही शरारतें बार-बार होती हैं, तो फिर इसे बदतमीजी का नाम दिया जाता है। हर विद्यार्थी को यह समझना चाहिये कि स्कूल उसके लिए केवल एक स्कूल न होकर बहुत कुछ है और यहीं से उसके पूरे जीवन की शुरूआत होगी। यदि वह यहाँ जरा-सी भी चूक करता है, तो उसके जीवन की नैया डाँवाडोल हो सकती है। कभी-कभी तो यहाँ तक देखा गया है कि एक विद्यार्थी कुछ समय तक तो बहुत अच्छा है, अपनी पढ़ाई-लिखाई और व्यवहार में। फिर अचानक एक दिन उसमें ऐसा बदलाव देखने को मिलता है कि समझ में नहीं आता कि वह इतना लापरवाह कैसे हो गया। इसका सीधा-सा मतलब है कि उसकी संगति बदल गई, एक विचारक की कुछ पंक्तियाँ पढ़ी थीं उनका कहना था कि मैं आपके मित्रों को देखकर बता सकता हूँ कि आप कैसे होंगें। भले ही आप अपने बारे में कुछ ना बतायें। कितने सही शब्द उन्होंने कहे। ये बात हमें हमेशा ध्यान में रखनी चाहिये कि हम जिनके साथ खड़े हैं, वे किस तरह के लोग हैं। मित्रता आपको सही या गलत किसी भी दिशा

में मोड़ सकती है। अतः, मित्र बनाते समय ध्यान रखें कि बाद में आपकों कहीं पछताना ना पड़े। आज आये दिन इस तरह की खबरें आती हैं कि कल स्कूल के छात्र एकान्त स्थान में सिगरेट पीते हुए या गुटका खाते हुए दिखे या इतनी तेज गति से बाइक चलाते हुए जा रहे थे कि कोई दुर्घटना घट सकती थी या फिर परीक्षा–परिणाम प्रतिकूल आने पर आत्महत्या जैसा खतरनाक कदम उठा लिया थे सब बातें किस ओर इशारा करती है ? क्या स्कूलों में बच्चों को सिर्फ शिक्षा दी जा सकती है ? नैतिक या संस्कारी शिक्षा नहीं दी जा सकती है। शिक्षा अपना काम सिर्फ पैसों के लिए ही कर रहे हैं। उनका विद्यार्थियों से कोई आत्मिक सम्बन्ध नहीं है जो कि उन्हें बार–बार अच्छे या बुरे का ज्ञान दे सके। बच्चे देश का भविष्य हैं और देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का किसी को कोई हक नहीं है। चाहे विद्यार्थी स्वयं ही क्यों न हो।

एक स्कूल को अपनी प्रतिष्ठा बनाने में कई वर्ष लग जाते हैं, लेकिन उसकी प्रतिष्ठा चन्द मिनिटों में ही धूल में मिल जाती है, जब उसका कोई विद्यार्थी गलत कदम उठा लेता है। मेरा सभी बच्चों से यही कहना है कि जिस तरह से हम एक मन्दिर में प्रवेश करते समय मन्दिर की मर्यादा, शारीरिक साफ–सफाई और विचारों की पवित्रता का ध्यान रखते हैं, इसी तरह इस विद्या–रूपी मन्दिर में आने से पहले आप इन चीजों को बखूबी देख लें, क्योंकि ये ही बातें आपको अगली मंजिल की ओर पहुँचाने में कामयाब होंगी। यदि आपके विचार पवित्र हैं, शरीर पवित्र है, तब आपको विद्याध्ययन में कोई कठिनाई नहीं होगी और आप कठिन–से–कठिन विषय को भी सरलतापूर्वक समझ सकेंगे। कहा भी गया है कि अनुशासन व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाता है। अतः, विद्यार्थियों को अनुशासित रहते हुए अपना कार्य करना चाहिये, अपने शिक्षकों का आदर करने के साथ–साथ उनकी हर बात ध्यानपूर्वक सुनना चाहिये और जिन बातों के लिए वे आपको रोक रहे हैं, उन्हें फिर भविष्य में न करने का प्रण करना चाहिये, क्योंकि विद्यालय में आपके भविष्य की नींव पड़ रही है और इसी नींव के ऊपर आपके जीवन की इमारत खड़ी होगी। यदि नींव ही कमजोर रहेगी, तो इमारत का क्या होगा ? आशा है, सभी बच्चे मेरे इस लेख से कोई सबक लेंगे और अपने आप में परिवर्तन लाने की कोशिश करके अपना भविष्य उज्ज्वल बनायेंगे। आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए समस्त नवांकुर–परिवार।

– ***श्रीमती रेणु श्रीवास्तव***
(उच्च.श्रे. शिक्षिका)

विद्या, विद्यार्थी एवं अभिभावक

विद्यार्थी का लक्ष्य है विद्या प्राप्ति। विद्या प्राप्ति के माध्यम हैं गुरूजन या शिक्षक। शिक्षक से विद्या प्राप्ति के तीन उपाय हैं नम्रता, जिज्ञासा और आदर। गांधीजी प्रायः कहा करते थे, जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते। तुलसीदास ने इसी बात का समर्थन करते हुये कहा है, यथा नवहि बुध विद्या पाये। अध्यापक के प्रति नम्रता दिखाईये और जो चाहे पाइये। जिज्ञासा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता। यह तीव्र बुद्धि का स्थायी और निश्चित गुण है। जबकि तीसरा गुण है सेवा। सेवा से मेवा मिलती है यह उक्ति जग प्रसिद्ध है। गुरूजनों की सेवा करके विद्या प्राप्ति संभव है। वर्तमान समय में अपने गुरूजनों को दिया गया सच्चा आदर ही वास्तविक सेवा है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी को परिश्रमी और स्वाध्यायी होना चाहिये। चाणक्य का कथन है सुखार्थी को विद्या कहाँ और विद्यार्थी को सुख कहाँ।

आदर्श विद्यार्थी को सादा जीवन और उच्च विचार के आदर्श का पालन करना चाहिये। उसे फैशनेबल वस्त्रों, केशविन्यास और शरीर की सजावट से बचना चाहिये। कारण, ये बातें विद्यार्थी के मन में कलुषित विचार उत्पन्न करते हैं। अपने साथियों से भी मेरा आग्रह है कि वे विद्यार्थियों को वास्तविक शिक्षा प्रदान करें, ताकि वे शिक्षा के मायने समझ सकें। विद्याविहीन पशु को ज्ञान का तृतीय नेत्र प्रदान कर विवेकशील बनाना, अच्छे बुरे की पहचान उत्पन्न करना, कायदे कानून की समझ प्रदान करना तथा विद्यार्थियों का नैतिक उत्थान कर व्यक्तित्व निर्माण करना शिक्षा है। शिक्षा का महत्त्व मानव जीवन के लिये वैसा ही है जैसे संगमरमर के टुकड़ों से मूर्ति बनाने की शिल्पकला का। शिक्षक का कर्तव्य केवल ज्ञान दान करना नहीं, संस्कार और सुरूचि के अंकुर को पल्लवित करना है। मेरा अभिभावकों से भी अनुरोध है कि वे बचपन से ही बच्चों की प्रत्येक प्रतिक्रिया पर ध्यान रखें। उन्हें अच्छे बुरे की पहचान करायें ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें। एक पढ़े लिखे नागरिक की पहचान केवल आर्थिक समृद्धता नहीं हैं बल्कि उनके नैतिक आचरण से हैं। मानव की पहली पाठशाला उसका अपना परिवार है और प्रथम शिक्षक उसके माता–पिता है। इसलिये यदि वह उनके जीवन के पहले अध्याय को सही तरीके से समझ सके तो प्रगति के अन्य सोपानों को वह खुद

व खुद छू लेगा इसलिये अंततः मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि किसी भी विद्यार्थी के विकास में अभिभावक, शिक्षक व स्वयं विद्यार्थी तीनों की ही अहम भूमिका है।

इसलिये–

रखो जरा दो चार कदम ही, मगर जरा तबियत से।
कि मंजिल खुद व खुद पास चलकर आयेगी।।
इसलिये आगे आयें सब मिल–जुल कर।
अपनी तदबीर से ही तकदीर संभल जायेगी।।

– ***रमेश शर्मा,*** व्याख्याता

Sincerity

Activities towards work on time should be sincerely. In fact we can't effort many actions at a time sincerely but we should do a work at a time. For example if we are at a ground in playing games we should be concentrate on our game and if we work as a student, we must be sincere for every work according to time. Aim must be like Arjuna in Mahabharat which is depicted to fish's eye. By the time if we act every work sincerely, our work will definitely success. Our regard towards work pures our soul and our personality. In inner side of success our sincerity must be connected then reward may be got by us as a success. There is no magic of success without sincerity, which includes good combination of thought and action. Co-ordination is part of success that creates fascinating shadow of future.

- Abhishek Mishra,
UDT English.

'Research'

Aoccdrnig to rscheearch at cmabrigde uinervtisy it doesn't mettaer in what oredr the ltteers in a wrod are, the olny iprmoetnt tihng is taht the frist and lsat ltteer be at the rghit pclae. The rset can be a toatl, it woutiht porbelm. Tihs is bcuseae the huamn mnid deos not raed ervey lteter by istlef, but the wrod as a wlohe. **Thus according to Matt Davis of Cambridge University.**

- S. K. Pingle 'Suman',
Lect. N.V.P.

क्या आप जानते हैं ?

1. एक हमिंगबर्ड का दिल एक मिनिट में 1400 बार धड़कता है।
2. मनुष्य की भौंहें एक बार ऊपर करने में 30 माँसपेशियाँ कार्य करती हैं।
3. 4 घण्टे के अन्दर करीब 100 कप कॉफी पीना मनुष्य की जान ले सकता है।
4. जब हम 70 साल की उम्र तक पहुँचते हैं, तो हमारा दिल 72 धड़कन प्रति मिनिट की दर से 250 करोड़ बार धड़क चुका होता है।
5. जन्म से मृत्यु तक हमारी आँखें इकसार होती हैं।
6. सामान्यत: शिशु 300 हड्डियाँ के साथ पैदा होता है व वयस्क होते–होते हड्डियाँ 206 रह जाती हैं।
7. अगर हमें नया पेन लिखने के लिए दिया जाये, तो 70 प्रतिशत लोग उससे अपना नाम ही लिखेंगे।
8. एक औसत इंसान के सिर पर 1 लाख बाल होते हैं।
9. एक बड़ा–सा कूबड़ होने के बाद भी ऊँट की पीठ एक दम सीधी होती है।
10. एक बच्चे के जन्म के साथ करीब 90 लाख लोगों का भी जन्म होता है।

– ***उर्पित समैया एवं मयंक समैया***
कक्षा–12 वाणिज्य

पिता

बच्चों के लिए स्नेह– दुआ–प्यार है पिता,
परिवार इमारत है, तो आधार है पिता।
कठिनाइयों के काँटे हटाता है राह से,
रक्षा–कवच है, ढाल है, हथियार है पिता।
बच्चों के मनोबल का ब्रह्मा है,
हमेशा बच्चों के लिए शक्ति का संसार है पिता।
जब उपनिषद् ने, पितृ देवो भव कहा,
तभी स्पष्ट हो गया कि असरदार है पिता।
सन्तान बुलन्दी को छुए इसलिए हर पल,
खुद अपने ही बलिदान को तैयार है पिता।
पावन हदीस इसलिए सदियों से कह रही,
माँ के चरण में, स्वर्ग–द्वार है पिता।

–पंकज दुबे
कक्षा–12 (गणित)

DOLPHIN

- Abhishek Dangi, *Class 6th Dolphin*

COMMON WEALTH GAMES-2010

In the history of India, first time Common wealth games were organised in Delhi. They were played in Pt. Jawaharlal Nehru stadium. In there games above than 6000 player had participated.

In19th common wealth games from our Madhya Pradesh Omkar singh has participated. Omkar singh on 7th Oct. he had won a gold medal to India. It is very nice that day he was also performed very nice.

In fighting Geeta had won a gold medal to India. On Thursdays 7th Oct. in fighting Geeta faught with Australian. Ameli Benstend her weight was of 55 kg. and she won by 11-0 and geeta scored a gold medal. On 7th Oct. India had total 31 medal.

In common wealth games India had position, On Sunday India won 4 gold medal. The number of gold medal were to 25. Total medal are 71 and India got to 2 position days first gold medal won by Dipika. Second gold medal Harprit singh had won. Third medal Rahul Banergee had won. And last fourth medal Sunil kukar had won in fighting.

Madel won by India in following year. The number of madel of India are following-

Year	Gold	Silver	*Broje*	Position
1930	India had not participated			
1934	0	0	1	12
1338	0	0	0	last
1950	India had not participated			
1954	0	0	0	last
1958	2	1	0	8
1962	India had not participated			
1966	3	4	3	8
1970	5	3	4	6
1974	4	8	3	6
1978	5	5	5	6
1982	5	8	3	6
1986	India had not participated			
1990	13	8	11	5
1994	6	11	7	6
1998	7	10	8	7
2002	30	22	17	4
2006	22	17	10	4
Total	**102**	**97**	**72**	**271**

In 2010 India won 38 gold 27 Silver, 36 Bronj madle.

Rank	*Country*	*Gold*	*Silver*	*Broje*	*Total*
1.	Australia	75	55	78	**177**
2.	India	38	27	36	**101**
3.	England	37	59	46	**142**

मस्ती

एक नौजवान रोज सुबह से लेकर देर शाम तक मस्ती करता, उसे अच्छा खाना और अच्छे कपड़े मोबाइल, बाईक सभी चाहिये, पर कार्य कुछ भी नहीं करता। माँ–बाप परेशान रहते थे, पर वह उसे ज्यादा डॉटते –फटकारते नहीं थे। नौजवान पूरी तरह अपने पिता पर ही निर्भर था। कुछ सालों बाद पिता मर गया और वह नौजवान, जो अब अधेड़ हो चुका था, वह बेरोजगार।

–**विजय शर्मा** *(क्रीड़ा-प्रभारी)*

Inventors& Discoverers

Fahrenhiet	-	Mercury thermometer
Chadwick	-	Neutron
Daimler	-	Gas Engine
Cavendish	-	Hydrogine
Lawrence	-	Cyclotron
Herts	-	electrical waves
Marconi	-	Radio
Austin	-	Motorcar
Stephenson	-	Railway engine
R.W.watt	-	Radar
sholes	-	Typewriter
Gatling	-	machine gun
Macmillan	-	Bicycle
Montgolfer	-	Balloon
Lockyer	-	Helium gas
Nobel	-	Dynamite
Faraday	-	Dynamo
Lippershey	-	Telescope
Colt	-	Revolver
Broquet	-	Helicopter
Crutenberg	-	Printing press

- Akshat Sharma
Class-6th(Dolphin)

Indian states and their capitals

No.	State	-	Capital
1.	Arunachal pradesh	-	Itanagar
2.	Andhra pradesh	-	Hyderabad
3.	Assam	-	Dispur
4.	Bihar	-	Raipur
5.	Jharkhand	-	Ranchi
6.	Karnataka	-	Bangalore
7.	Mizoram	-	Aizawl
8.	manipur	-	Imphal
9.	Nagaland	-	Kohima
10.	Maharastra	-	Mumbai
11.	Orissa	-	Bhubaneshwar
12.	Punjab	-	Chandigarh
13.	Sikkim	-	Gangtok
14.	Meghalay	-	Shillong
15.	Tripura	-	Agartla
16.	Tamilnadu	-	Chennai
17.	Uttar pradesh		Lucknow
18.	Jammu&kashmir	-	(in summer) Srinagar (in winter) Jammu

- Dhruv Upadhyay
Class-4th (Dolphin)

बच्चों की कलम से

जब दीपावली घर आती है

जब दीपावली घर आती है, संग फुलझडियाँ लाती है।
दिल का रावण जल जाता है, मन का मैल मिटाती है।
दीपशिखा-सी जलती आँखों में, ठण्डा काजल लगाती है।
अन्धकार का चीरहरण कर, राहें रौशन कर जाती है।
गैर गले लग जाते हैं, दीवारें गिर जाती हैं।
ढेर सौगातें लाती है, जब दीपावली आती है।

-कु. अलीना रिजवी, कक्षा- 5

जानिये क्या नहीं है इनमें

1.	कान है, पर सिर नहीं	-	कानपुर,
2.	कोला है, पर पेय नहीं	-	अकोला,
3.	केश है, पर बाल नहीं	-	ऋषिकेश,
4.	चेरी है, पर फल नहीं	-	पाण्डिचेरी,
5.	द्वार है, पर दरवाजा नहीं	-	हरिद्वार,
6.	जैन है, पर धर्म नहीं	-	उज्जैन,
7.	राय है, पर सलाह नहीं	-	रायपुर,
8.	नाटक है, पर पात्र नहीं	-	कर्नाटक,
9.	सौर है, पर सूर्य नहीं	-	मन्दसौर,
10.	हार है, पर पराजय नहीं	-	बिहार,
11.	रात है, पर चाँद नहीं	-	गुजरात,
12.	रस है, पर ग्रास नहीं	-	बनारस।

-योगेन्द्र तिवारी, कक्षा-3

गिलहरी

काली-काली धारी वाली,
पेड़ों पर चढ़ जाने वाली।
चिक-चिक-चिक-चिक गाने वाली,
सबका मन ललचाने वाली।
आँगन में आ गयी गिलहरी,
बच्चों को भा गयी गिलहरी,
कुतर-कुतर कर मीठे-मीठे,
सारे फल खा गयी गिलहरी।

-कु.प्रतीक्षा रघुवंशी, कक्षा-3

नवांकुर

बासौदा की शान है नवांकुर,
हम सब की पहचान है नवांकुर।
बरेठ रोड के पास खड़ा,
हुलिये में सुन्दर है बड़ा।
बासौदा की शान है नवांकुर,
हम सब की पहचान है नवांकुर।
मध्यप्रदेश में नाम है इसका,
नाम जैसा काम है इसका।
बासौदा की शान है नवांकुर,
सब की पहचान है नवांकुर।

– ***कु.योगिता पाली,*** कक्षा-सात

शिक्षक

दीपक होता है शिक्षक,
बाती उसके विद्यार्थी।
घी विद्यार्थी का अध्ययन,
लौ उसका जीवन।
बाती बिन दीपक सूना,
दीपक बिन बाती।
अध्ययन-रूपी घी न हो,
तो लौ कहाँ से आती।
शिक्षक एक महामन्त्र है,
जीवन का बड़ा यन्त्र है।
मन्त्र सदा ये रटा करो,
आदर गुरु का किया करो।
ब्रह्मा का ये रूप है,
गुरु तो देव-स्वरूप है।
गुरु ही सच्चा ज्ञान है,
गुरु तो प्रभु समान है।
जो विद्यार्थी गुरु से जुड़े,
जीवन में सफलता पाये,
आगे ही वो बढ़ता जाये।

-***कु.मोनिका रघुवंशी,*** कक्षा-7

।। माँ की महिमा ।।

माँ ने हमें जन्म दिया है,
सबसे ज्यादा प्यार किया है।
माँ का तुम सम्मान करो,
सदा उसी के पास रहो।
माँ होती है सबसे प्यारी,
इस दुनिया में सबसे न्यारी।
माँ का है सबसे ऊँचा स्थान,
हर समस्या का वह करती निदान।
माँ ने है ये जीवन सँवारा,
उसके बिना क्या जीना हमारा।
माँ की ममता है सबसे बड़ी,
बचपन से अब तक यही मैं पढ़ी।
माँ बाँटती सबको ज्ञान,
सदा बने रहो गुणवान।
माँ का हम पर उपकार महान,
माँ के लिए हम देंगे जान।

-***कु. ऋचा लोधी,*** कक्षा-7

सुविचार

गुण न हो, तो रूप व्यर्थ है।
विनम्रता न हो, तो विद्या व्यर्थ है।
उपयोग न हो, तो धन व्यर्थ है।
साहस न हो, तो हथियार व्यर्थ है।
भूख न हो, तो भोजन व्यर्थ है।
होश न हो, तो जोश व्यर्थ है।
परोपकार न करने वाले का जीवन ही व्यर्थ है।

-***कु.मनीषा शर्मा,*** कक्षा-6

भारत प्यारा

भारत हमारा सबसे प्यारा,
हर मौसम है इसका न्यारा।
त्यौहारों की होती है बौछार,
दीवाली, ईद और तीज–त्यौहार।
मौसम की है बात निराली,
पवन चलती ठण्डी मतवाली।
विभिन्न धर्मों का यह देश हमारा,
सब जगह है एकता का नारा।
हिन्दी तो है मातृभाषा,
अंग्रेजी की भी है बड़ी अभिलाषा।
ऋषि–मुनियों की गायन–भाषा,
हिमालय और गंगा का है अटूट नाता।
विश्व–भर में है सबसे न्यारा,
भारत हमको है प्राणों से प्यारा।

–***कु. निशा यादव,*** कक्षा– 7

दोस्ती

दोस्ती का रिश्ता होता है खास,
जो होता है हर किसी के पास।
जो देती है हर कदम पर साथ,
वही दोस्ती होती है खास।
मिलते हैं जीवन में कभी खुशी, कभी गम,
पर सच्ची दोस्ती कभी नहीं होती कम।
भूल कर भी नहीं भूल सकते, तुम यह नाता,
सदा यादों में रहता है, दोस्ती का यह नाता।
रिश्ते–नाते सब हो, जाते हैं बेकार,
पर दोस्ती रहती है, सदा बरकरार।
यही बातें दोस्ती में होती हैं खास,
जो बनाती दोस्ती के रिश्ते खास।

–कु.हिमांशी शर्मा, कक्षा–7

गाय का वैज्ञानिक महत्त्व

- गाय के दूध में रेडियो–विकिरण से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति होती है, ऐसा रूसी वैज्ञानिक शिरोविच कहते हैं।
- वैज्ञानिकों के अनुसन्धान के अनुसार गाय के गोबर में हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति है।
- गाय का दूध हृदय–रोग से बचाता है।
- गाय के घी को अग्नि पर डालकर धुआँ करने अथवा इससे हवन यज्ञ करने से वातावरण सर्वाधिक रेडियेशन से बचता है।
- क्षय के रोगियों को गाय के बाड़े या गौशाला में रखने से गोबर और गौमूत्र की गन्ध से उनके क्षय–रोग के कीटाणु मर जाते हैं।
- जिन घरों में गाय के गोबर से लिपाई–पुताई होती है, वे घर रेडियो–विकिरण से सुरक्षित रहते हैं।
- गाय की रीढ़ में सूर्यकेतु नाड़ी होती है, जो सूर्य के प्रकाश में जाग्रत होती है और पीले रंग के पदार्थ छोड़ने के कारण गाय का दूध–घी पीला होता है।

–***कु. प्रतीक्षा रघुवंशी,*** कक्षा–9

क्या आप जानते हैं ?

1. दरियाई घोड़ा सबसे धीमी गति से चलने वाला समुद्री प्राणी है, जो 0.01 मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से चलता है।
2. बिच्छू की लगभग 2000 जातियाँ होती हैं, जो न्यूजीलैण्ड व अण्टार्कटिका छोड़कर विश्व के सभी भागों में पायी जाती हैं।
3. विश्व के सबसे छोटे कुत्ते का नाम ''ची हुआ–हुआ'' है। इसका मतलब है, आसमान में छोटा–सा कुत्ता।
4. विश्व की 75 प्रतिशत चिड़ियाँ जन्म के छः महीने बाद ही मर जाती हैं।
5. मछलियों और कीड़े–मकोड़ों की पलकें नहीं होती। इनकी आँखों में एक प्रकार के लेंस लगे होते हैं। इन्हीं से इनकी आँखों की रक्षा होती है।
6. एक मक्खी केवल 14 दिनों तक जीवित रह सकती है।
7. जिराफ अपने कानों को अपनी जीभ से साफ कर लेता है। उसकी जीभ 50 सेण्टीमीटर लम्बी होती है।
8. डेनमार्क में सूअरों की तादाद बहुत ज्यादा है। वहाँ सूअरों की संख्या इंसानों की संख्या से दुगनी है।

–***कु.निशा अवस्थी,*** कक्षा–10

पहेलियाँ

1. एक बाग में फूल अनेक,
उन फूलों का राजा एक।
बगिया में जब राजा आये,
दूर–दूर आभा फैलाये।
2. एक पहेली मैं बुझाऊँ,
सिर को काट नमक छिड़काऊँ।
3. नहीं चाहिए इंजन मुझको,
नहीं चाहिए खाना।
मुझ पर चढ़कर आस–पास का,
कर लो सफर सुहाना ।
4. काला हाथी उड़ता जाये,
जंजीर से न पकडाये।
5. खड़ा द्वार पर ऐसा घोड़ा,
जिसने चाहा पेट मरोड़ा।

–कु. पूजा साहू
कक्षा–11

1. चंद्रमा, 2. खीरा, 3. साइकिल,
4. धुआँ, 5. ताला।

प्यारी क्रमशः

हर शाला में जाये क्रमशः,
नित्य नियमों से निकलती क्रमशः।
ज्ञान–विज्ञान की दुनिया में,
विजय–पताका फहराने वाली,
अपनी शाला हो या घर आँगन,
सबको पसन्द है क्रमशः।
हर शाला में जाये क्रमशः,
बच्चों को लुभाती क्रमशः।
अपने उद्देश्यों को करती है सार्थक,
जब पढ़ते हैं क्रमशः।
अपने नाम को करती है सार्थक,
पढ़ने वाला न बैठे निरर्थक।
सच में सच्ची लगती क्रमशः,
सबको अच्छी लगती क्रमशः।
हर शाला में जाये क्रमशः,
हम सब के मन को भाये क्रमशः।

–कु. माधुरी सेन,
कक्षा–10

चाँद–सितारे

कितने सुन्दर कितने न्यारे।
पृथ्वी–सूरज–चाँद–सितारे।
अपनी पृथ्वी दिखो न गोल,
पता लगायें क्या है पोल।
सूरज नाना बहुत बड़े हैं,
छोटे दिखते दूर खड़े हैं।
चन्दा मामा दिखें न रोज,
पता लगायें करके खोज।
मन करता है उड़ कर जायें,
तारों से मिल कर आयें।
पर हम न पहुँच सकें वहाँ
आओ इनको पढ़ें यहाँ

–कृष्ण कुमार सोनी,
कक्षा–3

प्रेरक बिन्दु

पीने के लिए कोई चीज है तो	–	क्रोध
खाने के लिए कोई चीज है तो	–	गम
लेने के लिए कोई चीज है तो	–	ज्ञान
देने के लिए कोई चीज है तो	–	दान
कहने के लिए कोई चीजहै तो	–	सत्य
दिखाने के लिए कोई चीज है तो	–	दया
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो	–	अहंकार
जीतने के लिए कोई चीज है तो	–	मन
त्यागने के लिए कोई चीज है तो	–	ईर्ष्या
परखने के लिए कोई चीज है तो	–	बुद्धि
संग्रह के लिए कोई चीज है तो	–	विद्या
रखने के लिए कोई चीज है तो	–	मान
सफलता के लिए कोई चीज है तो	–	प्रसन्नता
करने के लिए कोई चीज है तो	–	सत्संग
धारण के लिए कोई चीज है तो	–	सन्तोष

– शुभम जैन, कक्षा–11

आधुनिक छात्र

दो पन्नों की कॉपी लेकर कॉलेज पढ़ने जाते हैं,
रास्ते में मिल गये दोस्त, तो पिक्चर को मुड़ जाते हैं।
जींस कार्गो की पेण्ट देख लो, चश्मा आँखों पर होगा,
जींस की शर्ट रंगीन, रूमाल भी चमकदार होगा।
इण्टरवल में लगी तलब, तो चौराहे पर जाते हैं,
मुँह में बढ़िया पान दबाकर, सिगरेट भी सुलगाते हैं।
अटेण्डेंस जब शुरू हुई, तो दौड़े–भागे आते हैं,
प्रिंसीपल ने नहीं सुनी, तो टीचर को फुसलाते हैं।
पढ़ा–लिखा कुछ नहीं पर, पास की आस लगाते हैं,
रिजल्ट आउट होने पर, घर छोड़कर भाग जाते हैं।
जब माँ–बाप दु:खी होकर, पेपर में छपवाते हैं,
जहाँ कहीं भी हो प्यारे, हम तुमको पास बुलाते हैं।
पेपर में पढ़ लिया कहीं, तब खुशी–खुशी घर आते हैं,
माता–पिता की क्या चिन्ता, फिर उन्हें धमकाते हैं।
ये हैं उनके ठाठ–बाट, जो आधुनिक छात्र कहलाते हैं।

– सचिन दाँगी, कक्षा–9

''जिन्दगी में मृत्यु से अधिक सुनिश्चित कोई तथ्य नहीं, फिर भी मनुष्य न जाने क्यों मृत्यु से बचने की कोशिश करता है।''

First's In India

1. The first and the last Indian Governor General of India.
Ans- Rajgopalachari
2. The first Indian Artificial satellite to go in space:-
Ans- Aryabhatta
3. The first woman Cheif minister of an Indian state:-
Ans- Mrs. Sucheta Kriplani (Cm. of U.P.)
4. The first Indian lady to become miss world:-
Ans- Rita Faria
5. The first Indian sports lady to register a win in wimbledon Tennis:-
Ans- Sania Mirza
6. First Indian to win an Oscar Award
Ans-Bhanu Athaiya:-
7. First Indian to win a farmula- Three race:-
Ans- Narian Karthikeyan
8. Indian first feature film:-
Ans- "Raja Harish Chandra" by Dada saheb Phalke in 1913.

-Ku.SHUBHANGI THAKUR
CLASS:- XII (Com.)

BIO-DATA OF A COMPUTER

1.	Name	- Computer
2.	Year of Birth	- 1832
3.	Father's name	- Charles Babbage
4.	Mother's name	- Lady Ada Lovelace
5.	Favourite Snacks	- Chips
6.	Favourite Animals	- Mouse
7.	Favourite Dress	- Software
8.	Favourite Letters	- C
9.	Disease I am afraid of	- Virus fever
10.	Friends	- Good Programmers
11.	Aim	- To think like a man
12.	Lucky numbers	- 0,1

-Ku. Shilpi Arya,
Class- 11th (maths)

PROVERBS

1. Time past is forever gone.
2. Patience is the best remedy.
3. Two heads are better than one.
4. Too much of everything is bad.
5. As you sow, so shall you reap.

- संजय कुशवाह, उ.श्रे.शि.

RIDDLES

1. you can't keep this until you have given it.
2. Take off my skin, I can't cry, but you will, what am I ?
3. What can go up and come down without moving?
4. What do you kill with empty hands?
5. What do you serve that you can't eat?
6. What do you throw out when you want to use it but take in when you don't want to use it?

Ans. 1. Promise 2. Onion 3. The temperature 4.Gloves 5. A tennis ball 6. An ancho

-ku. Reshma Raghuwanshi
Class 12th (math)

हम तुम्हें बतलाएँ कैसा है, विज्ञान

मटर उगाकर खेत में, दिया नया विज्ञान।
आनुवांशिकी के पिता, मेण्डल हुए महान।।
कौन किसका पुरखा है, किसका मिला प्रमाण।
डार्विन के कारण हुई, विकास को पहचान।।
दूर बैठकर आपस में, बातें करता कौन।
ग्राहम बैल को शुक्रिया, दे गये टेलीफोन।।
किसी जीव का किस, जगह होता है स्थान।
ऐसा लिनियस ने दिया, वर्गीकरण विज्ञान।।
कैसी तारों की बस्ती, या उनका आलोक।
गेलीलियो दिखा गया, देकर टेलिस्कोप।।
जिसको चाहो भेज दो, अब तुम टेलीग्राम।
मारकोनी का शुक्रिया, उनको करो प्रणाम।।
प्रत्येक जीव का देता ज्ञान, ऐसा हमारा है विज्ञान ।।

–***रूपेश रघुवंशी,*** कक्षा–11 जीव–विज्ञान

''मैं नरक में भी अच्छी पुस्तकों का स्वागत करूँगा,
क्योंकि उनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी,
वहीं स्वर्ग बन जायेगा''
–लोकमान्य तिलक

भारतीय व विश्व रेल

1. 1814 ई. में जार्ज स्टीफेंसन ने रेलवे ट्रेक्सन के लिए सर्वप्रथम भाप लोकोमोटिव इंजन का विकास किया।
2. 27 सितम्बर, 1885 को प्रथम रेल स्कॉटटन से डालिंगटन के बीच इंग्लैण्ड में चली थी।
3. जार्ज स्टीफेंसन को रेलवे का पितामह भी कहते हैं।
4. भारत में रेल–विकास का श्रेय आर.एम.स्टीफेन्सन को जाता है।
5. भारत में 16 अप्रैल, 1853 को बोरीबन्दर से ठाणे के बीच पहली रेलगाड़ी चलायी गयी। यह यात्रा सत्तावन मिनिट की थी। इसमें चौदह डिब्बे व भाप के तीन इंजन साहिब, सिन्ध, सुलतान लगे थे।
6. लार्ड डलहौजी सन् 1849–1856 तक भारत के गवर्नर जनरल रहे, जिन्होंने भारतीय रेलवे के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
7. भारतीय रेलवे से 18.1 लाख व्यक्तियों को रोजगार मिलता है।
8. **विश्व के प्रमुख देशों में रेल की शुरूआत–**
   1. ब्रिटेन – सन् 1825,
   2. कनाडा – सन् 1825,
   3. ऑस्ट्रेलिया–1827,
   4. फ्रांस – 1830,
   5. यू.एस.ए. – 1832,
   6. भारत – 1853।
9. हमारे देश में 6843 रेलवे स्टेशन हैं।
10. हमारे देश का कुल रेल–मार्ग 63140 किमी.लम्बा है।
11. सन् 2010–11 में रेलवे द्वारा भारत सरकार को कुल 94,765 करोड़ रुपये आय होने का अनुमान है।

–***भगवत सिंह पाल,*** कक्षा–12 गणित

चुटकुले

1. **अध्यापक**– मनु बेटा, न तुम्हें हिन्दी आती है और न ही अंग्रेजी। फिर तुम्हें क्या आता है?
   मनु– सर, मुझे पढ़ने के नाम पसीना आता है।
2. **राजू**–मेरे पापा के पास साइकिल से लेकर हवाईजहाज तक है।
   मित्र– अच्छा, तो वे बहुत बड़े आदमी होगें।
   राजू–अरे नहीं, उनकी खिलौनों की दुकान है।
3. **मोहित**–मेरा भाई बहुत फैशनेबल है, सारा दिन कपड़े ही बदलता रहता है।
   शालू–तुम्हारा भाई कितने साल है।
   मोहित– छः महीने का।
4. **शिक्षक (छात्र से)**– तुम्हारा और तुम्हारे पिता जी का नाम क्या है?
   छात्र–जी, मेरा नाम बाल जीवन और पिता जी का नाम सूर्य प्रकाश।
   शिक्षक– अंग्रेजी में बताओ।
   छात्र– जी, मेरा नाम लाइफबॉय और पिताजी का सनलाइट है।
5. एक दिन एक व्यापारी के घर में चोर घुस गया। रात का समय था, व्यापारी सो रहा था। चोर की आहट सुनकर वह उठ गया।
   चोर–सोना कहाँ है?
   व्यापारी– सारा घर खाली है, कहीं भी सो जाओ।
6. **बेटा**– मम्मी, आज मेरे दोस्त घर पर आ रहे हैं। मेरे सारे खिलौने अलमारी में छिपा दो।
   मम्मी– क्यों, क्या तुम्हारे दोस्त चोर है?
   बेटा– नहीं, वे अपनी चीजें पहचानते हैं।

सब का उत्तर एक

1. मात्राएँ कितनी होती हैं?
2. दिन में कितने घण्टे होते हैं?
3. रात में कितने घण्टे होते हैं?
4. साल में कितने महीने होते हैं?
5. एक दर्जन में कितने होते हैं?
6. घड़ी में कितने अंक होते हैं?
7. साल में कितनी पूर्णिमाएँ होती हैं?
8. साल में कितनी अमावस्याएँ होती हैं?
9. भारत में कितने ज्योतिर्लिंग हैं?
10. एक फुट में कितने इंच होते हैं?
11. राशियाँ कितनी होती हैं?
12. कुम्भ का मेला कितने सालों में लगता है?

उत्तर–12

–***कु.अनामिका परमार,*** कक्षा–11 जीवविज्ञान

बेटी मीठी धूप

1. ''पंचदेव का वास हो, सुख–आनन्द बहार,
जिस घर में बेटी जन्म ले, पले वहाँ संस्कार ''।
2. ''मान, मोह, मन, मन्द – मन्द मुस्कान ,
बेटी कोमल भावना, बेटी घर की शान ''।
3. ''बेटी मन्द बयार–सी, मीठी–मीठी गन्ध ,
जीवन–कागज पर लिखी, ममता का नवछन्द ''।
4. ''पूनम की है चाँदनी, ऋतुओं का नवरूप,
सपनों का आधार है, बेटी मीठी धूप ''।
5. ''केसर, कमल, कनक, कला, फूलों का उपहार ,
बेटी मन की छाँह है, बेटी बहती धार ''।

संकलन –कु.अपूर्वा शर्मा,
कक्षा–11 जीवविज्ञान

बूझो तो जानें

1. यह विषय जो तुम पढ़ते हो, देवों की भाषा कहलाती है।
मत कहना हम सबको, ये पहेली भी न आती है।।

2. दो चौके आठ, पचास और दस साठ,
बोलो किसमें करते हो, प्रश्नावली और पाठ।।

3. ये अजीब विषय है, है दूसरे मुल्क की भाषा,
जो बोले गिटपिट–गिटपिट, वही बड़ा अफसर कहलाता ।।

4. भारत की संस्कृति, समृद्धि, भारत का गौरव–गान,
बीते कल की बातें पढ़ते, राजाओं की कथा महान।

5. कविता, कहानी, निबन्ध, है इसमें व्याकरण–भाषा,
यह विषय बतलाओ कौन–सा, यह है हमारी राष्ट्रभाषा।

6. इससे करते हो प्रयोग, पाते हो हर चीज का ज्ञान,
पढ़ते हैं वैज्ञानिक लोग, वैज्ञानिक युग में इसका मान।

7. इसमें पढ़ते भू, इसमें पढ़ते गोल,
इन दोनों की जोड़कर, झट बालक हर बोल।

संकलन–कु. अंजन गुप्ता, कक्षा–11(गणित)

1. संस्कृत, 2. गणित 3. अंग्रेजी 4. इतिहास
5. हिन्दी 6. विज्ञान 7. भूगोल

रेलवे क्षेत्र एवं मुख्यालय

क्र.	क्षेत्र	–	मुख्यालय
1.	मध्य रेलवे	–	मुम्बई वी.टी.
2.	पूर्वी रेलवे	–	कोलकाता
3.	उत्तर रेलवे	–	नयी दिल्ली
4.	पश्चिमी रेलवे	–	मुम्बई चर्चगेट
5.	दक्षिण रेलवे	–	चैन्ने
6.	उत्तर–पूर्वी रेलवे	–	गोरखपुर
7.	पूर्वी–मध्य रेलवे	–	हाजीपुर
8.	उत्तर–पूर्वी सीमान्त रेलवे	–	मालीगाँव, गुवाहाटी
9.	दक्षिण–पूर्वी रेलवे	–	कोलकाता
10.	उत्तर–पश्चिमी रेलवे	–	जयपुर।

–**सोहिल खान,** कक्षा–6

तीन बाते हमेशा याद रखें

1. तीन चीजें किसी का इन्तजार नहीं करतीं–
1. समय 2. मौत 3. ग्राहक।
2. तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं–
1. माँ 2. बाप 3. जवानी।
3. तीन चीजें निकलने पर वापस नहीं आती–
1. तीर कमान से 2. बात जबान से 3. प्राण शरीर से।
4. तीन चीजें परदे में रखने योग्य हैं–
1. धन 2. स्त्री 3. भोजन।
5. तीन चीजों से बचने की कोशिश करनी चाहिए–
1. बुरी संगत 2. स्वार्थ 3. निन्दा।
6. तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है–
1. ईश्वर 2. परिश्रम 3. विद्या।
7. तीन चीजों को कभी न भूलनी चाहिए–
1. कर्ज 2. फर्ज 3. मर्ज।
8. तीन चीजों का सम्मान करना चाहिए–
1. माता 2. पिता 3. गुरु।
9. तीनों को हमेशा याद रखो–
1. काम 2. लोभ 3. मद।
10. तीनों पर सदा दया करो–
1. बालक 2. भूखे 3. पागल पर।

–**कु. जूनी शर्मा,** कक्षा–11

हम बतायें, तुम्हारा जन्म–दिन

दोस्तो! तुम न बताओ, मैं बताऊँगा तुम्हें कि तुम किस सन् में कौन–से महीने में किस दिन पैदा हुए थे। बस, जैसा–जैसा कहता जाऊँ, तुम वैसा–वैसा करते जाओ–

1. सबसे पहले उस महीने को लिखो, जिसमें तुम पैदा हुए थे–
   मान लो यह फरवरी था यानी दूसरा महीना–2
2. इससे अगले वाले महीने की संख्या इस में जोड़ दो –
   यह हो गया 2+3 = 5
3. इसे पाँच से गुणा करो –
   5 X 5 = 25
4. संख्या के दाहिनी ओर शून्य (०) लगा दो –
   अब हो गई यह 250
5. अब इस संख्या में 18 जोड़ दो –
   250+18 = 268
6. जन्म का दिनांक भी इस संख्या में जोड़ो –
   मान लो 22 फरवरी 268+22 = 290
7. अब प्राप्त संख्या के दाहिनी ओर 88 लिख दो –
   = 29088
8. जन्म–वर्ष के अन्तिम दो अंक भी इस संख्या में जोड़ दो और परिणाम मुझे बताओ –
   29088+77 = 29165

अब देखो कि मैं क्या करता हूँ–

9. अब मैं तुम्हारे द्वारा बतायी गयी संख्या में से –
   29165–6888 =22277
   6888 घटाता हूँ।
   फिर इस संख्या को मैं इस तरह लिखता हूँ –
   2/22/77
   अब तुम ही बताओ कि तुम
   फरवरी सन् 1977 की 22 तारीख को ही पैदा हुए थे।

–***अभयकुमार लोधी,*** कक्षा– 11 (जीवविज्ञान)

कल

बीता कल या आने वाला, दोनों भ्रम और माया है।
वर्तमान है तेरा साहसी, जिसकी शीतल छाया है।।
बीत गया इतिहास बन गया, कल को किसने जाना है।
कर चिन्तन उस गहन रूप का, यही काम सयाना है।
कालचक्र का भँवर भयानक, जीव डूबता जाता है।
आकाश–कुसुम की खेती करता, फिर भी कुछ न पाता है।।
एक अँधेरा लाख सितारे, तिमिर नहीं हट पाता है।
ध्यान–योग का चन्द्रोदय ही, माया–तिमिर हटाता है।।
गुरु की कृपा से मिला सत्–पथ है, इस पर कदम बढ़ाना है।
सतत् ध्यान में रहकर बन्धु, जीवन सफल बनाना है।।
जीवन की सुन्दर बगिया में, कुसुम–कुलिश एक साथ रहे।
बिन गुरु पुष्प मिले न बन्दे, सदा कुलिश का घात सहे।।
ठगिनी माया ने भरमाया, बिन गुरु भ्रम न टूटे।
आदित्य वर्ण के ध्यान बिना, आवागमन न छूटे।।

संकलितः–कु. माधुरी दाँगी , कक्षा– 11 (गणित)

प्यार के दो बोल

खुशियों के तुम फूल बाँटकर,
जग की बगिया को महकाओ।
जिनकी आँखों में आँसू हों,
उनको भइया गले लगाओ।
सुख बाँटो, दुःख बाँटो सबके,
बाँटो प्रेम और प्रीत को।
सबके मन तुम जीतो भाई,
गाओ प्यार के गीत को।
सूरज–चाँद–सितारे बनकर,
तम को सदा मिटाये रखना।
दुःखियों के आँगन में तुम,
खुशियों के दीप जलाये रखना।
परहित करके जीता जग में,
वह महान् कहलाता है।
बनकर सबकी आँख का तारा,
आदर सबसे पाता है।
राम बनकर तुम,
मन के रावण को मिटाओ।
खुशियों के तुम फूल बाँटकर,
जग की बगिया को महकाओ।

–***कु.स्वीटी चिढ़ार,*** कक्षा–7

ग्लोबल वार्मिंग से किडनी की गम्भीर समस्या

विशेषज्ञों के आकलन के अनुसार धरती के तापमान में लगातार हो रही वृद्धि के कारण सन् 2050 तक 16 से 22 लाख तक अतिरिक्त लोगों में किडनी की पथरी की समस्या होगी। कुछ खास क्षेत्रों में यह समस्या तेजी से बढ़ेगी। इन क्षेत्रों को ''किडनी स्टोन बेल्ट'' नाम दिया गया है। कुछ क्षेत्रों में इस समस्या में 30 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है।

एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अध्यक्ष के अनुसार, किडनी मे पथरी का एक मुख्य कारण डिहाइड्रेशन है तथा ग्लोबल वार्मिंग डिहाड्रेशन की समस्या में और वृद्धि करेगा, जिससे किडनी की पथरी की समस्या और बढ़ेगी। सामान्यत: गर्मी के मौसम में किडनी की पथरी की समस्या में वृद्धि होती है।

किडनी की पथरी की समस्या का सम्बन्ध पानी पीने की मात्रा से है। अत:, इस समस्या से बच्चे के लिए खूब पानी पीना चाहिए। किडनी में पथरी ठोस क्रिस्टल होते हैं और मूत्र में घुलनशील लवण से बनते हैं। वे पर्यावरण और मेटाबोलिक समस्याओं के कारण बनते हैं। कम मात्रा में तरल पदार्थों का सेवन या डिहाइड्रेशन के कारण शरीर से अधिक मात्रा में तरल के निकलने के कारण मूत्र का बनना कम हो जाता है, जिससे पथरी का निर्माण करने वाले लवण का सान्द्रण बढ़ जाता है और इससे पथरी बनने का खतरा भी बढ़ जाता है। मूत्रांगों में बार–बार संक्रमण होने तथा कई आनुवंशिक कारणों से पथरी होने की आशंका बढ़ती है, जबकि अधिक मात्रा में पानी पीने से पथरी होने की सम्भावना घटती है।

हमारे सभी प्रयासों के बाद भी किडनी में पथरी हो ही जाती है। ठण्डी बीयर तथा मद्यपान से बचना चाहिए, क्योंकि इनके कारण शरीर से अधिक मात्रा में पानी निकलता है।

– राहुल रायकवार
कक्षा–10

नन्ही कूची

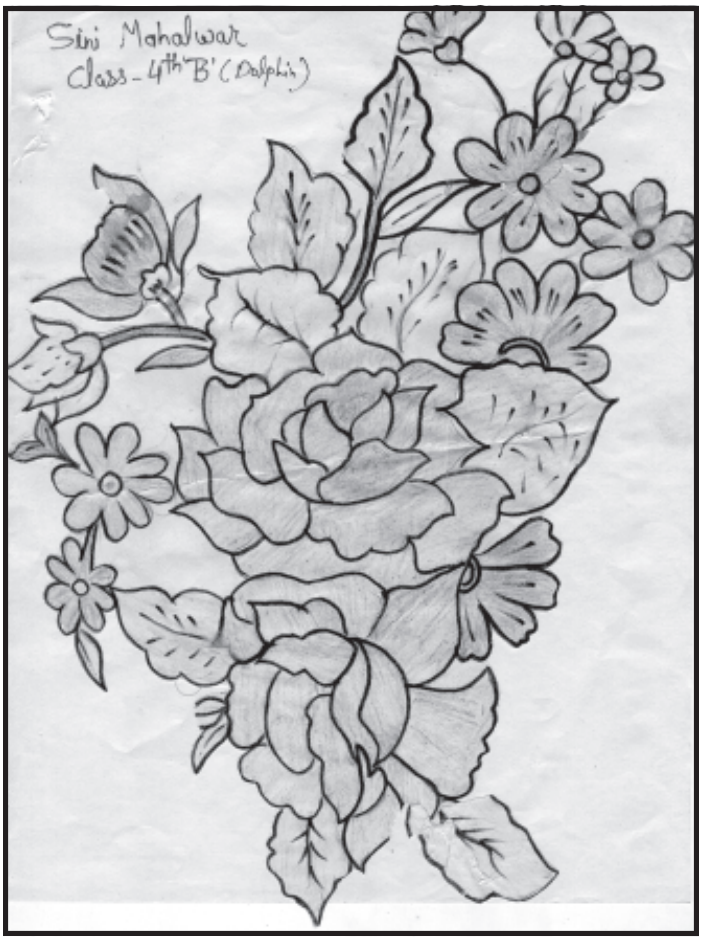

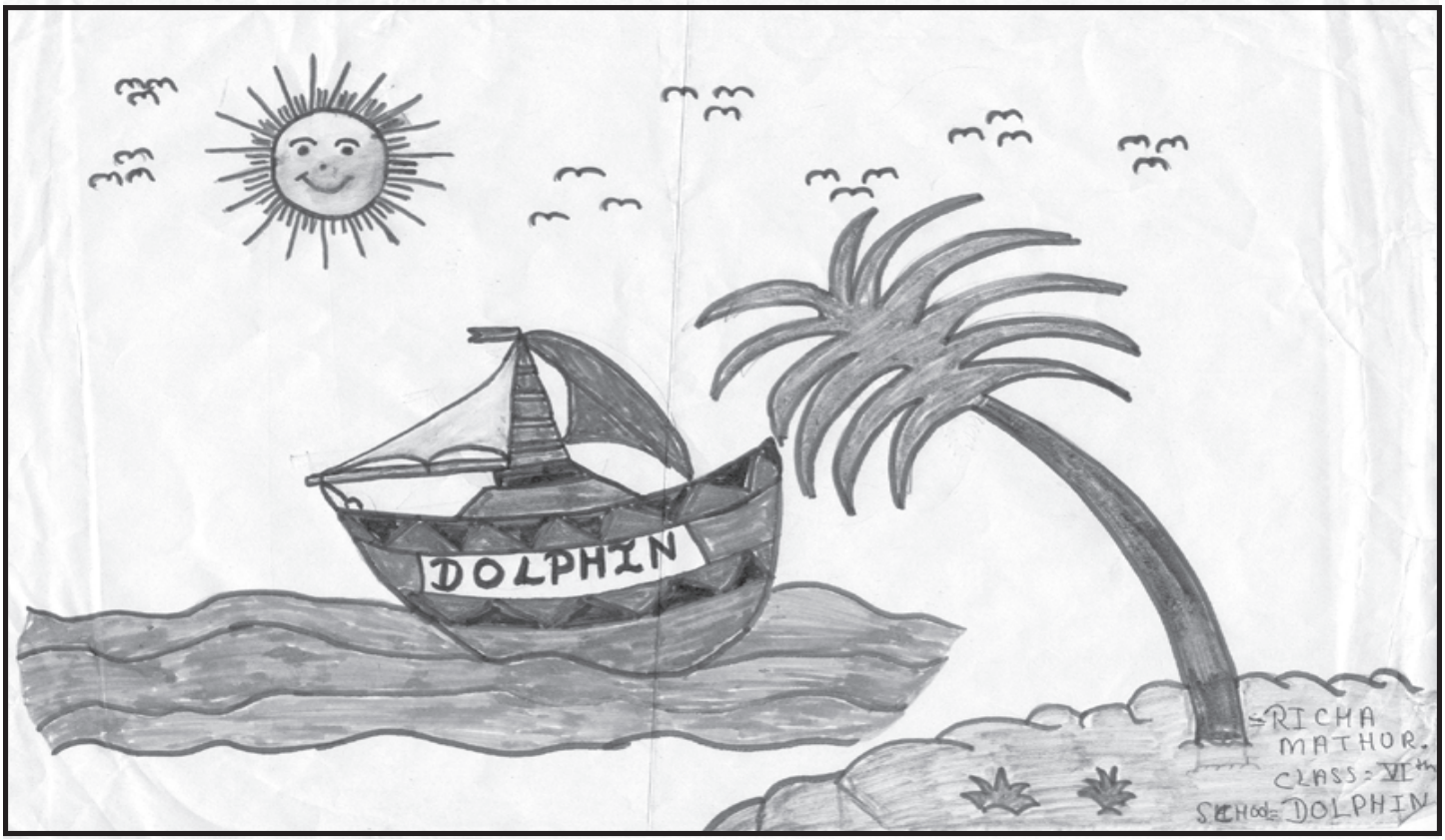

''जिसको होना निश्चित है और जो होकर रहता है उसे होनी कहते हैं तथा जो अनहोनी है वह कभी नहीं होती।''